जैन तीर्थवंदना

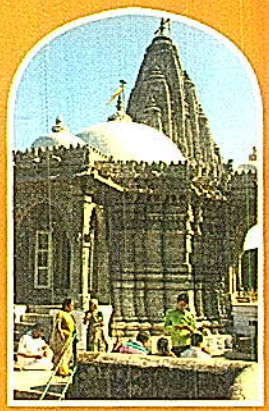

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

VOLUME : 6 ISSUE : 4 MUMBAI, OCTOBER 2015 PAGES : 36 PRICE : ₹25

तीर्थंकर श्री 1008 नेमिनाथ भगवान, प्रभासगिरि क्षेत्र - उत्तर प्रदेश

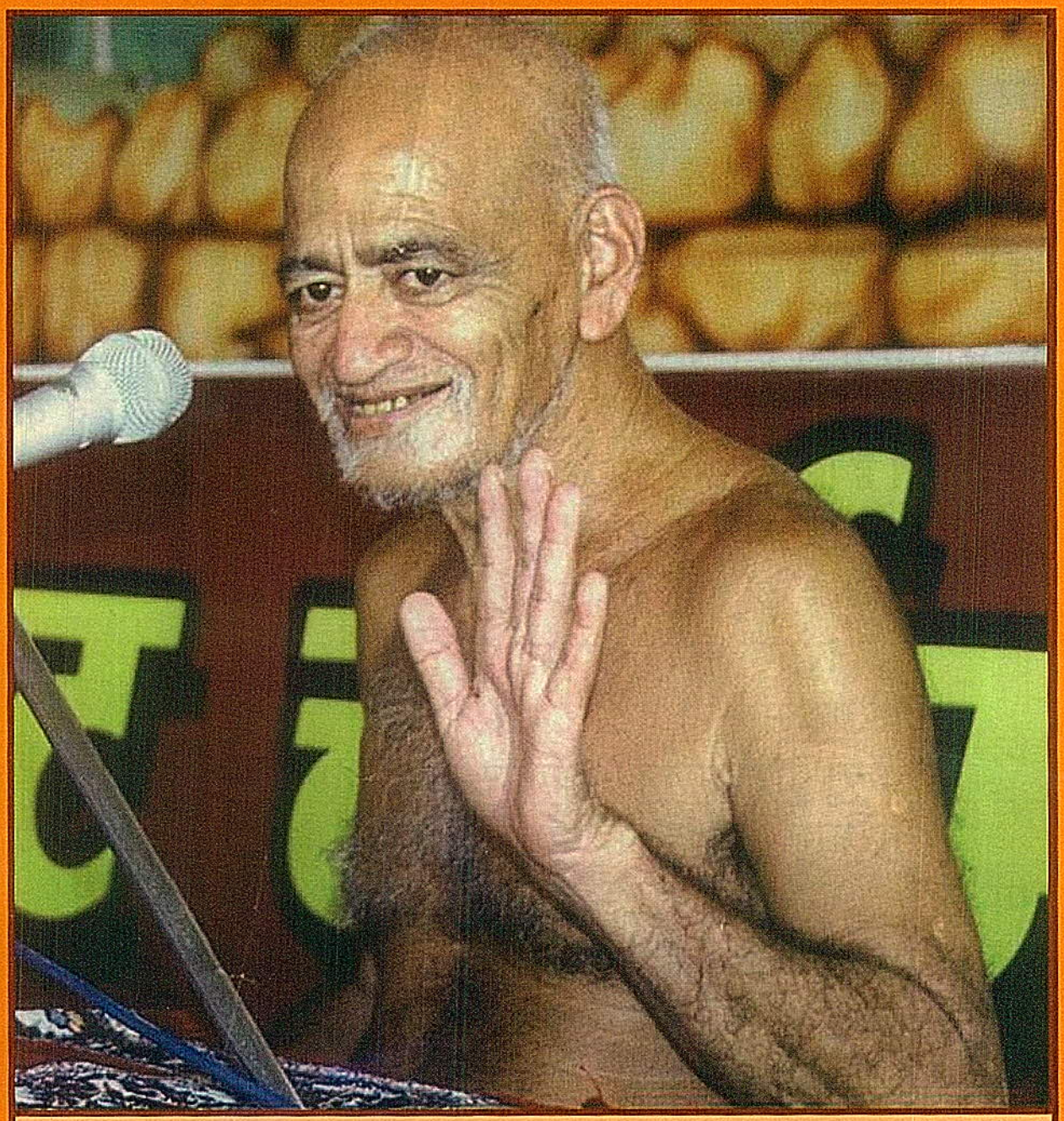

मंत्रों के मेरूदण्ड, द्वादशांग के व्याख्यान आप हैं।
मिटती मानवता के महायान अभियान आप हैं।।
माना कि काल दोष के कारण चौबीसी जन्म नहीं लेती।
लेकिन हम भक्तों को चौबीसी की पहचान आप हैं।।

R.K. MARBLE GROUP

Corporate Office : Makrana Road, Madanganj-Kishangarh, Dist.Ajmer(Raj.)-305801
Tel : +91-1463-301100, 260101 Fax : +91-1463-250601
E-mail : info@rkmarble.com, Website : www.rkmarble.com

अध्यक्ष की कलम से

साधर्मी भाईयों एवं बहिनों,

सादर जय जिनेन्द्र।

आप सभी ने 'पर्यूषण पर्व' आत्मिक आनंद से मनाया होगा। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष पद की गरिमा के अनुरूप यदि मुझसे जाने-अनजाने में आपके मन को ठेस लगी हो तो मैं हृदय से क्षमा मांगता हूँ। तीर्थों की रक्षा-सुरक्षा एवं कानूनी प्रक्रिया में यदि हमसे एवं हमारे पदाधिकारियों से कोई कमी प्रमादवश आपको नजर आई हो तो भी मैं करबद्ध क्षमा याचना करता हूँ एवं आपसे आपके सुझाव भेजकर हमें सचेत करने की विनय करता हूँ।

मैं आज आपसे अपने मन की बात करना चाहता हूँ। तीर्थक्षेत्रों, अतिशय क्षेत्रों, एवं नव निर्माण हुए क्षेत्रों का दर्शन करने के बाद यह कहना चाहता हूँ कि जो कार्य राष्ट्रीय स्तर की अनेक संस्थाएं 60-70 वर्षों में नहीं कर पाई वह कार्य हमारे आचार्यों, मुनिराजों ने अपनी चर्या की प्रभावना से, समाज को आशीर्वाद देकर चंद वर्षों में कर दिया। संस्थाएं जीर्णोद्धार, नवनिर्माण की योजनाएं ही बनाती रहीं और मंचों से घोषणाएं ही करती रहीं। वहीं महामुनिराजों ने, श्रमणों ने अपने चिंतन, आचरण एवं प्रवचन की प्रभावना से समाज में नये सूत्रों का संचार कर धर्म की आराधना हेतु लहरों में गति पैदा कर दी।

विशेष रूप से बुंदेलखण्ड, मध्य भारत, राजस्थान एवं महाराष्ट्र के अनेकों क्षेत्र अपने पुरातन स्वरूप से भव्य-मनोहारी जिन आयतनों में रुपांतरित हो गये हैं। जहां पहिले दर्शन-पूजन करने वाले थोड़े से लोग ही होते थे वहां आज दर्शन-पूजन-अभिषेक की कतारें लगनी शुरू हो गईं। जहां पुजारी-माली एवं व्यवस्थापकों का वेतन मुश्किल से दी जाती थी। आज वहां लाखों की राशि मंदिर जी की दानपेटी में आने लगी है। जहां पूर्व में दीवारों के पलस्तर, मरम्मत, रंग-रोगन की व्यवस्था वर्षों नहीं हो पाती थी आज वहां पाषाण की कलात्मक दीर्घायें बन चुकी हैं। जहां पूर्व में मुनिराजों-छोटे संघो के अल्प प्रवास के लायक भवन नहीं थे वहां आज बड़े-बड़े संघों के, चातुर्मास के लिए संत भवनों के निर्माण हो रहे हैं।

यह सब इसलिए सम्भव हो सका, क्योंकि समाज में धार्मिक जागृति पैदा हुई। लोगों में धर्म के प्रति, धर्मायतनों के प्रति, तपस्वी मुनिराजों के प्रति

तीर्थंकर से तीर्थ की प्रवृत्ति प्रवर्तमान होता है।

अंतरंग से श्रद्धाभाव का बीजारोपण हुआ। अपने वीतरागी तीर्थंकरों के जिनालयों के प्रति, पंचपरमेष्ठी के प्रति, धार्मिक अनुष्ठानों के प्रति कर्तव्य बोध जागृत हुआ। धन-दौलत एवं सम्पन्नका का सदुपयोग जिन-धर्म की प्रभावना का अनुकरणीय सोपान बनने लगा।

श्रेष्ठी - दानवीर पाड़ा शाह के जैसे संस्कारों से सुशोभित अनेक बड़े-छोटे भामाशाह गुरुचरणों में समर्पित हो, अपने जीवन को, अपने द्रव्य को, अर्पण हेतु, विनम्र श्रावक बन पुण्यार्जक बनने लगे।

इस घोर कलयुग में लोभ-मायाचारी, पाखण्ड, छल-कपट का मायाजाल चारों ओर फैला है। व्यसनों का बाजार सर्वत्र सजा हुआ है। धन, सम्पत्ति, ऊँचा पद पाने की लालसा में संसार पागल हो रहा है और ऐसे वातावरण से अप्रभावित कोई व्यक्ति यदि घर संसार, धन दौलत, वस्त्र-आभूषण रिश्ते-नाते छोड़कर 'जैनेश्वरी दीक्षा' की राह अपनाता है तो इससे बड़ा आश्चर्य वर्तमान में और क्या हो सकता है।

दीक्षा के बाद, निर्दोष व्रतों का पालन करते हुए, परिषहों को सहते हुए, गुरुचरणों के आशीष से, आत्मसाधना करते हुए, समाज को सदाचार और धार्मिक संस्कारों से जीवन जीने की कला का ज्ञान देते हैं तो इससे बड़ा 'अतिशय' और क्या प्रगट हो सकता है।

हम क्या समझ पायेंगे कि अतिशय चूने-ईंटों की दीवारों में नहीं 'जिन प्रतिमा' में है। हम कैसे समझ पायेंगे कि अतिशय निर्दोष व्रतों के पालनकर्ता महामुनिराजों की चर्या में निहित है ऊपर रूप में नहीं। हम कब समझेंगे कि भावनाओं की विशुद्धी ही आत्मबोध तक ले जायेंगी। कर्मकांडों की क्रियायें नहीं।

तो आइये हम ऐसे महाव्रती, आचार्य मुनिराजों के चरणों में नमोस्तु अर्पित करते हुए, ऐसे जीर्णोद्धार, नवनिर्माण वाले क्षेत्रों की जानकारी प्राप्त करने का यत्न करें एवं तीर्थों की रक्षा-सुरक्षा के भावों को आत्मसात करें। जैन तीर्थ वंदना के इस अंक से हम यही श्रृंखला को आगे बढ़ाने का प्रयास करेंगे, जिससे हम भी पुण्य के भाव सजो सकें।

जहां पर देव दर्शन हो वहीं भव पार होता है
जहां मुनियों की वाणी हो वहीं उद्धार होता है
मुझे लगता नहीं 'नमोकार' से ऊँचा यहां कोई
वहां सब पाप कट जाते जहां 'नमोकार' होता है

जय जिनेन्द्र, जय जय गुरुदेव।

भवदीय,

सुधीर जैन

क्रोध रूपी अग्नि, पुण्य रूपी रत्नों को जला देती है।

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 6 अंक 4 अक्टूबर 2015

परामर्श मण्डल

डॉ. नीलम जैन, पुणे
श्री संजय जैन 'मैक्स', इंदौर
श्री श्रीकिशोर जैन, दिल्ली

संपादक

उमानाथ आर. दुबे
डॉ. सुरेन्द्र जैन 'भारती', बुरहानपुर (मानद्)

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370

e-mail : tirthvandana4@yahoo.com
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : www.digamberjainteerth.com

'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी.रोड, मुंबई के सेविंग खाता नं.13100100008770 अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टैंक, मुंबई के सेविंग खाता नंबर 001210100017881 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें.

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

विज्ञापन आमंत्रित हैं.

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखको के अपने हैं. सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव बचत का चौथा भाग तीर्थसंरक्षण हेतु	6
जैनधर्म के बाईसवें तीर्थंकर श्री नेमिनाथ भगवान्	7
मुनिपुङ्गव श्री सुधासागर महाराज की तीर्थोद्धारक दृष्टि	9
विश्व की सबसे प्राचीन धरोहर .... गोलाकोट	13
पुण्योदय अतिशय क्षेत्र बजरंगगढ़ जी की विकास गाथा	16
मल्लप्पा परिवार की विरक्ति का वृत्तांत	18
भीलवाड़ा में हुआ 24वां ऐतिहासिक श्रावक संस्कार शिविर	21
महाराष्ट्र अंचल द्वारा विभिन्न तीर्थक्षेत्रों का दौरा	25
शाश्वत भूमि में शाश्वत ट्रस्ट द्वारा शाश्वत कार्य करने का संकल्प	27
विद्वत्परिषद् कार्यकारिणी में अनेक निर्णय	28
दीये बाहर में ही नहीं, भीतर में भी जले	29
आचार्य विमलसागर जन्मशताब्दी वर्ष का शुभारंभ	31

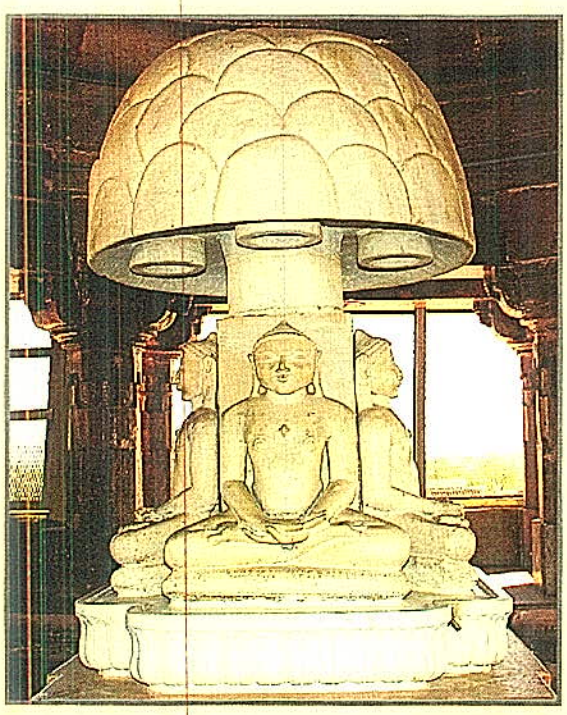

चंद्रमुखी
तीर्थंकर श्री 1008 नेमिनाथ
भगवान, भिलोडा-गुजरात

तीर्थ अहिंसा धर्म का आयतन है ।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव बचत का चौथा भाग तीर्थसंरक्षण हेतु

–कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन 'भारती'

वर्तमान में धर्म और धन का सम्बन्ध प्रगाढ़ होता जा रहा है। धन से धर्म और धर्म से सुख की नीति तो प्रसिद्ध ही है–"धनाद् धर्मः ततः सुखम्।" दीपावली पर्व भी समीप आ रहा है। जैन धर्मावलम्बी इसे तीर्थंकर महावीर निर्वाणोत्सव के नाम से मनाते हैं तो जैनेतर समाज इसे लक्ष्मी (धन) के आगमन के रूप में देखता है। अगर धन को लक्ष्मी मान भी लिया जाये तो याद रहे कि लक्ष्मी भी पुरुषार्थ को पसन्द करती है, श्रम की माँग करती है। समुचित श्रमपूर्वक प्राप्त धन ही जीवन में शांति लाता है, धर्म कराता है। दूषित तरीके से प्राप्त धन अशान्ति, भय, कष्ट और दुःख लाता है। कभी–कभी तो अन्यायोपार्जित धन से पूर्व संचित धन भी नष्ट होते देखा जाता है। बुराई धनागम में नहीं है लेकिन भगवान् महावीर कहते हैं कि धनागम न्यायमार्ग से हो। परिश्रम, ईमानदारी, न्याय–नीति का ध्यान रखकर कार्य करने वाला अपेक्षित लाभ प्राप्त करता है। भगवान् महावीर स्वामी ने कहा कि पवित्र साध्य के लिए साधन भी पवित्र होना चाहिए। जो दानदाता है वह भविष्य का पूंजी निवेशक है, पुण्य की वृद्धि करने वाला है, सुख–शांति को सुनिश्चित करने वाला है। धन कमाने के लिए जो दीपावली की पूर्व रात्रि में द्युत (जुआ) खेलते हैं वे अपने संचित पुण्य को ही नष्ट करते हैं। अपने ही साथी खिलाड़ी का पैसा (धन) जीत लेना कहाँ का न्याय है? आजकल पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सवों में जो लॉटरी पद्धति से कूपन निकालकर पात्र चयन किया जा रहा है वह अनुचित है, अनीति है, अधर्म है। धर्म के लिए दाँव लगाना समझ से परे है। जरूरत धन की नहीं, धर्म की है। धर्मात्मा धर्म कार्य के लिए, पुण्यवुद्धि के लिए धन–दान तो करता ही है।

जैनधर्म पद्धति में स्थापना निक्षेप के माध्यम से मूर्ति में अरहन्त/तीर्थंकर के स्वरूप की स्थापना/ प्रतिष्ठा की जाती है। इस हेतु मुनि/आचार्य द्वारा सूरि मन्त्र (सूर्य मन्त्र) दिया जाता है। इस आयोजन हेतु पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का विधान मिलता है जिसे प्रतिष्ठाचार्य शास्त्रीय विधि–विधान पूर्वक सम्पन्न कराते हैं। पूर्व में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव धर्मवृद्धि, वैराग्य जगाने और जैन एवं जैनेतर समाज में धर्म प्रभावना के निमित्त माने जाते थे। यह महोत्सव देखकर अनेक लोग व्रत–नियम ग्रहण करते थे। जैनेतर समाज के अनेक लोग मांसाहार आदि का त्याग कर देते थे। इनमें पात्र भी वे बनाए जाते थे जिनके आचार–विचार एवं व्यवहार सभ्य समाज के अनुकूल होते थे। एक–एक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में हुई धर्मप्रभावना को लोग वर्षों तक याद करते थे, आज भी याद करते हैं।

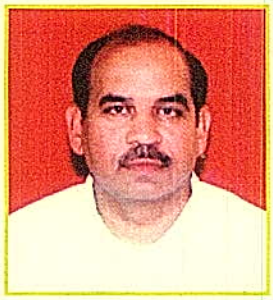

वर्तमान में जैनसमाज में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव धर्म के नाम पर धन प्राप्ति एवं निरंकुश धन व्यय के माध्यम बन गये हैं। धर्म तो बहुत पीछे खड़ा सिसकता रहता है। कहीं–कहीं तो प्रतिष्ठाचार्य ऐसी मूर्तियों की प्रतिष्ठा करवा देते हैं जो प्रतिष्ठापाठ के अनुरूप सही मानक नहीं रखतीं। इनके लिए दोषी कौन है ? अकेला धन ही लक्ष्य नहीं होना चाहिए बल्कि ऐसे आयोजनों में धर्म को केन्द्र में रखा जाना चाहिए। धन को सहायक द्रव्य माना जाय और पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव यथार्थ स्वरूप के प्रतिपादक बनें। इन प्रतिष्ठा महोत्सवों से प्राप्त आय के लिए सुनिश्चित योजना पहले से ही बना ली जानी चाहिए ताकि समाज में एक अच्छा संदेश जाए। बेहतर तो यह होगा कि इन पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सवों से किसी न किसी प्राचीन तीर्थ को जोड़ा जाए और प्राप्त (बचत) धन से इन तीर्थों का जीर्णोद्धार एवं संरक्षण किया जाए। ऐसा करने पर आयोजनकर्त्ता जो प्रायः नयी पीढ़ी के लोग हैं वे इन प्राचीन तीर्थों से जुड़ेंगे और तीर्थ संरक्षण का मार्ग प्रशस्त होगा। पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सवों के प्रमुख पाण्डाल के सामने ही संबंधित तीर्थ क्षेत्र के स्वरूप एवं स्थिति को दर्शाने वाली प्रदर्शनी आयोजित करना चाहिए। संबंधी तीर्थक्षेत्र कमेटी हो भी चाहिए कि वह अपनी प्रेरणादायी सामग्री के साथ वहाँ उपस्थित रहें और धार्मिक जन–जागरण में सहभागी बनें।

मंगलमय पाँचों कल्याणक, मंगल जिनशासन उद्देश मंगलमय निर्वाणभूमि, मंगलमय अतिशय क्षेत्र विशेष ।। (पं. राजमल पवैया)

जैनधर्म के बाईसवें तीर्थंकर श्री नेमिनाथ भगवान्

कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन 'भारती'
महामन्त्री--श्री अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद्
एल–65, न्यू इन्दिरानगर, बुरहानपुर (म.प्र.) मो. 09826565737

तीर्थंकर श्री नेमिनाथ की तपोभूमि गिरनार।
पंचम टोंक से मुक्ति पधारे धन्य धरा गिरनार।।
शंभु अनिरुद्ध प्रद्युम्न ने पाया जँह से निर्वाण,
वंदन ऐसी भूमि 'भारती', वन्दन है गिरनार।।

जम्बूद्वीप के पश्चिम विदेह क्षेत्र में सीतोदा नदी के उत्तर तट पर सुगंधिला नामक देश के सिंहपुर नामक नगर में श्री अर्हद्दास नामक राजा राज्य करते थे। उनकी रानी का जिनदत्ता था। एक बार रानी जिनदत्ता ने अष्टान्हिका पर्व में श्री जिनेन्द्र भगवान् महापूजा करने के बाद आशा की कि मैं कुल के तिलकभूत पुत्र को प्राप्त करूं। उसी रात श्रेष्ठ भावना से सोयी रानी ने पाँच स्वप्न देखे– 1. सिंह, 2. हाथी, 3. सूर्य, 4. चन्द्रमा, 5. लक्ष्मी का अभिषेक। उसी रात रानी के गर्भ में एक पुण्यात्मा जीव अवतरित हुआ जिसके जन्म होने पर उसका नाम अपराजित रखा गया। कालान्तर में जब अपराजित यौवन को प्राप्त हुआ तब एक दिन राजा को ज्ञात हुआ कि मनोहर नामक उद्यान में विमल वाहन नामक तीर्थंकर का पदार्पण हुआ है; तो राजा सहपरिवार रानियों के साथ उनके दर्शन को गया तथा सभी ने धर्मामृत का पान किया। धर्म श्रवण कर भोगों की इच्छा शांत हो गयी है जिसकी ऐसे राजा ने अपने अपने पुत्र अपराजित को राज्य देकर अन्य पाँच सौ राजाओं के साथ जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण कर ली। कुमार अपराजित ने भी अणुव्रत ग्रहण किये।

एक बार अष्टान्हिका पर्व के समय राजा अपराजित ने जिनप्रतिमाओं की पूजा की तभी आकाश से दो चारण ऋद्धिधारी मुनिराज वहाँ आकर विराजमान हुए। राजा ने उनके चरणों में नमस्कार कर धर्मोपदेश सुना। राजा अपराजित द्वारा जिज्ञासा होने पर मुनिराज ने उसके पूर्व भव का वृत्तांत सुनाया और बताया कि पूर्व भव में हम तीनों भाई थे। हम पूर्व जन्म के स्नेहवश तुम्हें देखने के लिए यहाँ आए हैं। तुम भव्य जीव हो। तुम्हारी आयु अब केवल एक माह शेष रह गयी है इसलिए शीघ्र ही आत्म कल्याण का विचार करो। राजा अपराजित ने उन दोनों मुनिराजों की वंदना की और उनके उपकार को माना। तदनंतर अपने पुत्र प्रितिंकर को राज्यभार सौंप कर आष्टान्हिक पूजा की और स्वयं प्रायोपगमन नामक संन्यास धारण कर लिया। तथा जीवन के अंत में संन्यास समाधिपूर्वक मरण को प्राप्त हो सोलहवें स्वर्ग में अच्युतेन्द्र का पद पाया। वहाँ से चयकर हस्तिनापुर के राजा श्रीचन्द्र की श्रीमती नामक रानी से सुप्रतिष्ठ

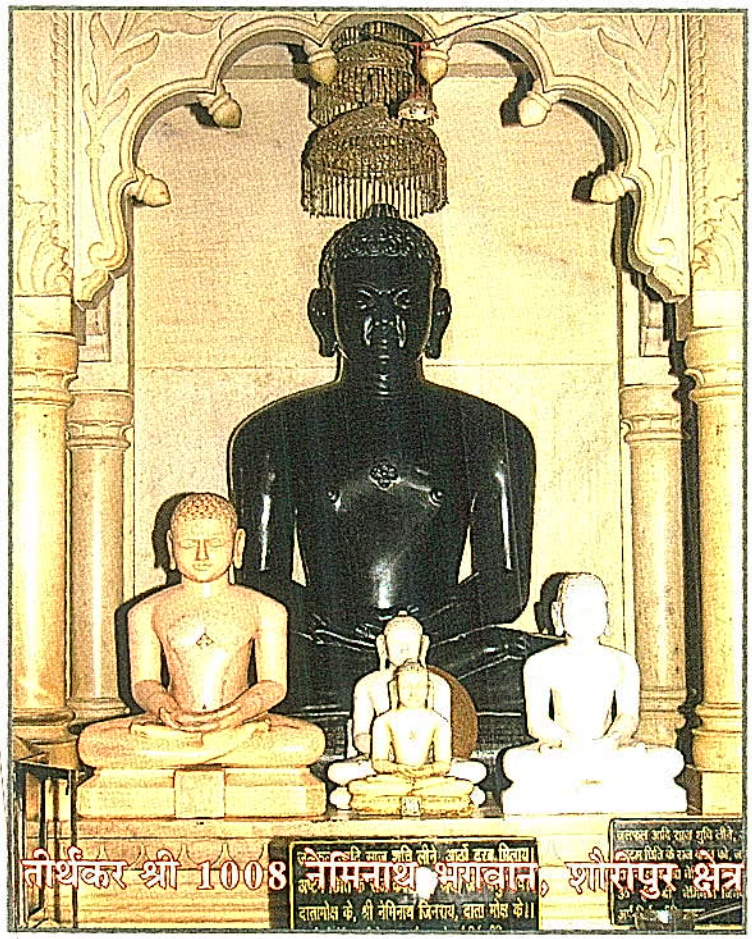

नामक पुत्र के रूप में जन्म लिया। उसने राज्यभोग भोगा। एक दिन उल्कापात से उत्पन्न वैराग्य के कारण उसने अपने पुत्र सुदृष्टि को राज्य देकर सुमन्दर नामक जिनेन्द्र के समीप दीक्षा धारण कर ली तथा सोलहकारण भावनाओं का चिन्तवन कर तीर्थंकर नामकर्म का बंध किया। आयु के अन्त में समाधिधारण कर एक महीने का संन्यास लिया जिसके प्रभाव से जयन्त नामक अनुत्तर विमान में अहमिन्द्र पद प्राप्त किया। अपनी सम्पूर्ण आयु में सुखोपभोग करते हुए वहाँ से चयकर यही जीव 22वां तीर्थंकर श्री नेमिनाथ बना। जिनका विवरण इस प्रकार है–

जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में शौरीपुर में यदु (यादव) वंशीय राजा समुद्रविजय राज करते थे। उनकी रानी का नाम शिवादेवी था। एक रात रानी शिवादेवी ने सोलह स्वप्न देखें जिसका फल राजा ने उन्हें तीर्थंकर पुत्र की प्राप्ति का सुयोग बताया। तदनुसार कार्तिक शुक्ल षष्ठी को अहमिन्द्र के भव से अवतरित जीव ने रानी शिवादेवी के गर्भ में प्रवेश किया। देवों ने कार्तिक

ज्ञान एक ऐसा धन है, जो मन को भी अपने वश में कर लेता है।

शुक्ल षष्ठी को गर्भ कल्याणक महोत्सव मनाया। नौ माह व्यतीत होने पर वैशाख शुक्ल त्रयोदशी के दिन चित्रा नक्षत्र में शुभ मुहूर्त में रानी शिवादेवी ने तीर्थंकर शिशु को जन्म दिया। जन्म के साथ ही तीन लोक में शांति का साम्राज्य स्थापित हो गया दूसरी ओर सौधर्म इन्द्र का आसन कंपायमान हुआ जिससे सौधर्म इन्द्र ने अपने अवधिज्ञान से जाना कि शौरीपुर में 22वें तीर्थंकर का जन्म हुआ है। वहीं से सौधर्म इन्द्र ने भगवान् को प्रणाम किया और अपने देव परिकर के साथ शौरीपुर आकर भगवान् को ऐरावत हाथी पर बिठाकर सुमेरुपर्वत की पाण्डुक शिला पर ले गया। जहाँ उनका 1008 क्षीरसागर के जल से भरे कलशों से अभिषेक किया। तदनन्तर उनकी अष्ट द्रव्य से पूजा की और उनका नाम श्री नेमिनाथ घोषित किया तथा जय–जयकार की। उनका चिन्ह शंख घोषित किया।

तीर्थंकर श्री नेमिनाथ दूज के चांद की तरह निरंतर वृद्धि को प्राप्त होने लगे। उनका वर्ण कृष्ण था। शरीर की ऊँचाई 10 धनुष थी तथा आयु 1000 वर्ष की थी। उनका कुमार काल 300वर्ष का था। वे बाल ब्रम्हचारी थे। उनके साथ एक विचित्र घटना घटी कि उनका विवाह जूनागढ़ की राजकुमारी राजुल के साथ तय कर दिया गया। निश्चित समय पर शौरीपुर से बारात जूनागढ़ के निकट पहुंची। नगर के बाहर वर–नेमिनाथ ने देखा कि एक बाड़े में अनेक पशुओं को बंदी बनाकर रखा गया है। वे सब पशु चीत्कार कर रहे हैं। उन्होंने जब अपने सारथी से पूछा कि इन पशुओं को बंदी क्यों बनाया गया है? तब उसने बताया कि यह पशु मांसाहारी लोगों के भोजन के लिए बंदी बनाए गये हैं। यह सुनते ही करुणा से भर उठे नेमिनाथ के अन्दर विद्यमान अहिंसा का प्रवाह और तेज हो उठा और उन्होंने तत्काल अपना सेहरा उतार फेंका और कहा कि मैं अब विवाह नहीं करूंगा बल्कि वन जाकर संन्यास ग्रहण करूंगा। उसी समय लोकांतिक देवों ने आकर उनके विचार की प्रशंसा और अनुमोदना की। तदनंतर श्री नेमिनाथ ने गिरनार पर्वत के सहस्रवन में जाकर श्रावक शुक्ल षष्ठी के दिन चित्रा नक्षत्र के रहते अपराह्न काल में मेषशृंग वृक्ष के नीचे 1000 राजाओं के साथ दिगम्बर दीक्षा ग्रहण कर ली। कहीं–कहीं शास्त्रों में उनके दीक्षा वन का नाम सहकार (द्वारावती) भी आता है।

उनका छद्मस्थकाल 56 दिन का माना गया है। उन्हें आश्विन शुक्ल 1 के दिन पूर्वाह्न में ऊर्जयन्तगिरि (गिरनार) में चित्रा नक्षत्र में बांस के वृक्ष के नीचे केवलज्ञान उत्पन्न हो गया। देवों ने केवलज्ञान महोत्सव मनाया।

सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से कुबेर ने डेढ़ योजन विस्तृत समवशरण की रचना की। जहाँ अन्तरिक्ष में विराजमान सर्वज्ञ जिन श्री नेमिनाथ तीर्थंकर की दिव्य ध्वनि खिरी; जिसमें सर्व जीवहित का मार्ग प्रतिपादित था। श्री नमिनाथ अरहन्त के समवशरण में वरदत्त को आदि लेकर ग्यारह गणधर थे। समवशरण में केवलियों की संख्या 1500 तथा आर्यिकाओं की संख्या 40000 थी। जिस राजकुमारी राजुल से उनका विवाह होने वाला था उस राजुल ने भी उनका ही अनुसरण कर आर्यिका व्रत ग्रहण किया और वह तीर्थंकर श्री नेमिनाथ के समवशरण में राजमति (यक्षिणी) नामक मुख्य आर्यिका बनी। उनके मुख्य श्रोता उग्रसेन थे। उनका कैवल्य काल 699 वर्ष, 10 माह, 4 दिन का रहा।

इस प्रकार सभी आर्य क्षेत्र में समीचीन धर्म का उपदेश देकर कृतार्थ करते हुए तीर्थंकर श्री नेमिनाथ जब आयु का एक माह शेष रहा तब वे विहार बन्दकर गिरनार पर्वत की पांचवीं टोंक पर जाकर विराजमान हुए। वहाँ उन्होंने 533 मुनियों के साथ एक माह तक का प्रतिमायोग धारणकर लिया और आषाढ़ कृष्ण अष्टमी (उत्तर पुराण के अनुसार सप्तमी) के दिन सायंकाल चित्रा नक्षत्र में पद्मासन से मोक्ष प्राप्त किया। उसी समय देवों ने आकर तीर्थंकर श्री नेमिनाथ का निर्वाण कल्याणक महोत्सव मनाया, पूजन–अर्जन की। अग्निकुमार जाति के देवों ने भगवान् के शेष नख–केश लेकर मायामयी शरीर की रचनाकर उनका अग्नि संस्कार किया।

तीर्थंकर श्री नेमिनाथ के निर्वाण के साथ मुक्त हुए जीवों की संख्या 536 मानी गयी है। बलदेव एवं श्रीकृष्ण उनके चचेरे भाई थे। सभी में परस्पर स्नेह था।

तीर्थंकर श्री नेमिनाथ भगवान् की निर्वाण भूमि गुजरात प्रान्त के जूनागढ़ जिले में स्थित गिरनार पर्वत की पांचवीं टोंक सदियों से मान्य है। यहाँ प्रतिदिन जैन समाज के नर–नारी बड़ी संख्या में जाकर पांचवीं टोंक में स्थित भगवान् नेमिनाथ के चरण चिन्ह तथा गुफा की प्रस्तर दीवार पर अंकित तीर्थंकर श्री नेमिनाथ की छवि के दर्शन कर अपने सौभाग्य को जगाते हैं। हरिवंशपुराण (65/14) में लिखा है कि गिरनार पर्वत पर इन्द्र ने वज्र से उकेर कर इस लोक में पवित्र सिद्ध शिला का निर्माण किया तथा उसे जिनेन्द्र भगवान् के लक्षणों के समूह से युक्त किया–

ऊर्जयन्तगिरौ वज्री वज्रेणालिख्य पाविनीम्।
लोके सिद्धिशिलां चक्रे जिनलक्षणपंक्तिभिः।।

तीर्थंकर जिन श्री नेमिनाथ भगवान् ने पशुओं की रक्षा के साथ सभी जीवों को अहिंसा व्रत के अनुरूप शाकाहार का संदेश दिया तथा जियो और जीने दो की भावना को अपने आदर्श से प्रभावी बनाया; वे तीर्थंकर श्री नेमिनाथ भगवान् हम सबके पथ को आलोकित करें; मेरी यही भावना है।

हम किसी को जीवन दे नहीं सकते, लेकिन जीवन बचा तो सकते हैं।

मुनिपुङ्गव श्री सुधासागर महाराज की तीर्थोद्धारक दृष्टि

-कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन 'भारती'
महामन्त्री श्री अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद्,
एल ६५, न्यू इन्दिरानगर, बुरहानपुर (म.प्र.) मो. ९८२६५६५७३७

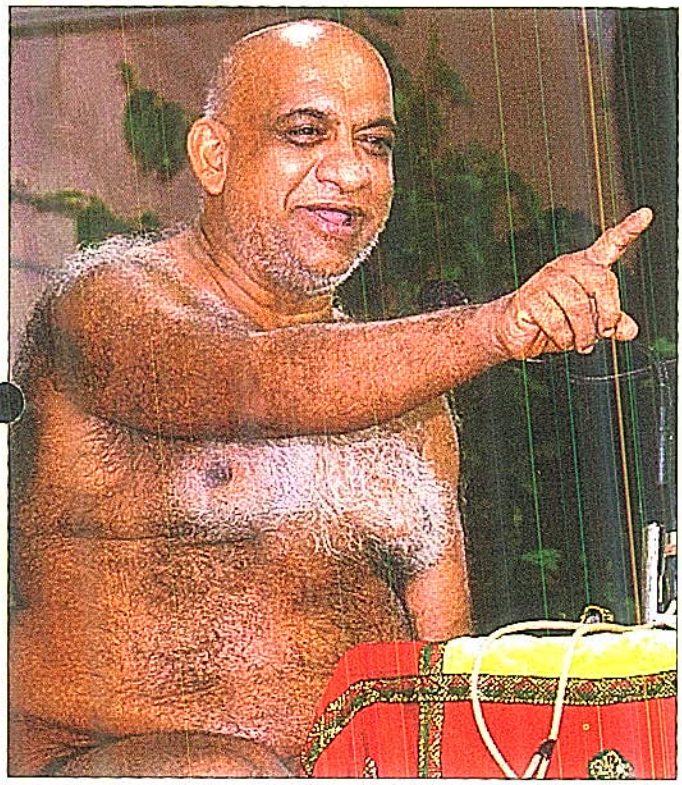

परमपूज्य संत शिरोमणि, वरिष्ठतम आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के आज्ञानुवर्ती परमप्रभावक शिष्य मुनिपुङ्गव श्री सुधासागर जी महाराज जहाँ भारतीय जैन श्रमण संस्कृति के अनुरूप जन-जन में धर्म प्रभावनापूर्वक संस्कारों का बीजारोपण कर रहे हैं, मनुष्यों को श्रावक बना रहे हैं, वहीं उन्हें धर्म और धर्मयतनों की रक्षा के लिए भी तैयार कर रहे हैं। आज उनकी एक प्रेरणा पर गृहस्थ जन अपनी उत्कृष्ट जिनभक्ति एवं दान भावना का परिचय देते हैं। यह किसी साधु के प्रति आस्था और निष्ठा का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है।

मुनिपुङ्गव श्री सुधासागर महाराज ने अपने गुरु आचार्य श्री विद्यासागर जी की आज्ञा से जब स्वतन्त्र विहार किया तो उनकी दृष्टि में खंदारगिरि, सैरोन जी, देवगढ़ जैसे तीर्थक्षेत्र सामने आये जो जीर्णशीर्ण हालत में थे, मूर्तियाँ यत्र-तत्र बिखरी हुई थीं; पददलित हो रहीं थीं। उनकी उपेक्षा देखकर आँखों में आँसु आ जाते थे। समाज एवं प्रबंध समितियाँ कहती थीं कि एक ओर हमारे पास धन नहीं है तो दूसरी ओर पुरातत्त्व विभाग हमें कुछ भी कार्य करने की अनुमति नहीं देता है अत: हम क्या कर सकते हैं? किंकर्त्तव्यविमूढ़ की स्थिति में समाज था। ऐसे समय में देवगढ़ में मुनिपुङ्गव श्री सुधासागर जी महाराज का पदार्पण हुआ और उन्होंने निश्चय किया कि मैं जैसे भी संभव हो देवगढ़ तीर्थ का जीर्णोद्धार कराऊँगा। मुनिश्री ने पुरातत्त्व विभाग के तत्कालीन अधिकारियों से चर्चा की और उन्हें देवगढ़ तीर्थ क्षेत्र के जीर्णोद्धार की योजना बतायी। इस पर पुरातत्त्व विभाग के अधिकारियों ने कहा कि हमारे पास धन का अभाव है यदि आप जीर्णोद्धार करा सकें तो मैं सहर्ष अनुमति दे सकता हूँ। मुनिश्री तो चाहते ही यही थे अत: उन्होंने पुरातत्त्व विभाग से समाज को जीर्णोद्धार की अनुमति दिलवा दी। इसतरह देवगढ़ तीर्थ का जीर्णोद्धार प्रारम्भ हो गया। इस हेतु वहाँ १००८ इन्द्र इन्द्राणियों ने श्री इन्द्रध्वज महामंडल विधान का मुनिश्री के सानिध्य में आयोजन किया और प्रभूत देव,शास्त्र,गुरुभक्ति एवं दान भावना का परिचय दिया। इस तरह मुनिश्री की प्रेरणा से सम्पूर्ण देवगढ़ तीर्थ व्यवस्थित हुआ। इधर-उधर बिखरी हुई मूर्तियों को योग्यस्थान पर प्रतिष्ठित किया गया। सम्पूर्ण जीर्णोद्धार के बाद वहाँ श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव और पंच गजरथ महोत्सव का अभूतपूर्व आयोजन हुआ।

देवगढ़ में कराये गये जीर्णोद्धार की गूँज सम्पूर्ण भारतवर्ष में सुनाई देने लगी और सबके मनोमस्तिष्क में यह बात अच्छी तरह बैठ गई कि जो कार्य कोई और नहीं करा सकता वह कार्य मुनिपुङ्गव श्री सुधासागर जी महाराज करा सकते हैं। फलस्वरूप जहाँ-जहाँ भी तीर्थ क्षरण को प्राप्त हो रहे थे तथा उपेक्षित थे तथा जहाँ धनाभाव के कारण कार्य नहीं हो पा रहे थे वहाँ की प्रबंध समितियाँ एवं समाजजन मुनि श्री के पास इस निवेदन के साथ आने लगे कि महाराज आप हमारे तीर्थ पर पधारें और हमारे तीर्थ के जीर्णोद्धार हेतु सान्निध्य एवं मार्गदर्शन प्रदान करें।

यहाँ उल्लेखनीय है कि मुनिपुङ्गव श्री सुधासागर जी महाराज ने तीर्थ जीर्णोद्धार के अन्तर्गत निम्नलिखित आयाम निश्चित किए-

१. समस्त दिगम्बर जैन तीर्थों का संरक्षण एवं संवर्द्धन होना चाहिए। इसके अन्तर्गत सर्वप्रथम मन्दिर एवं मूर्तियों का संरक्षण और जरूरत होने पर उनका आधुनिकीकरण करना चाहिए।

धर्म किसी दुकान पर नहीं मिलता जो पैसे से खरीदा जाये।

देवगढ़ क्षेत्र की झलकियाँ

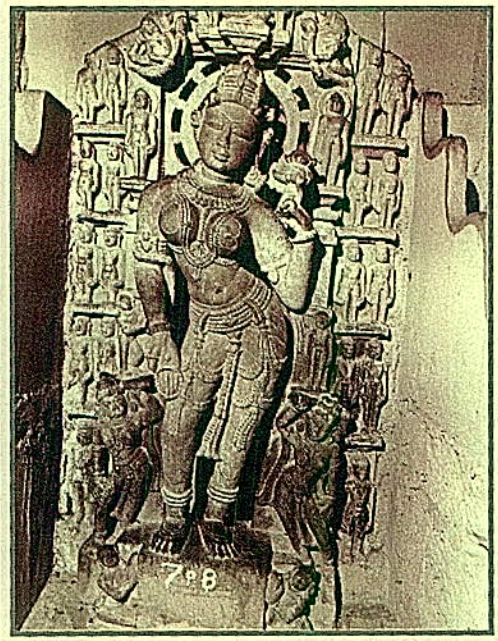

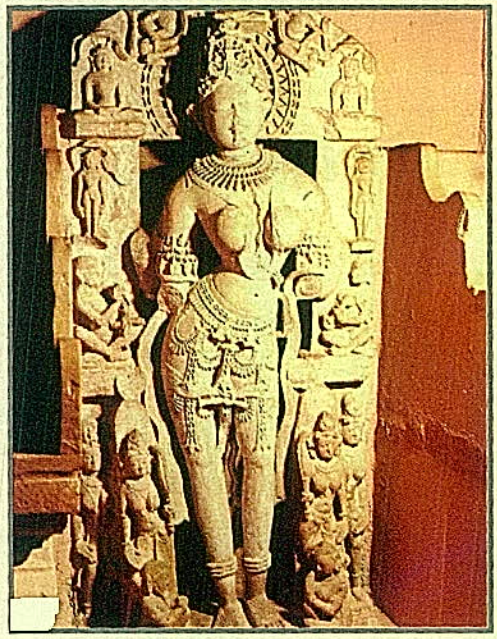

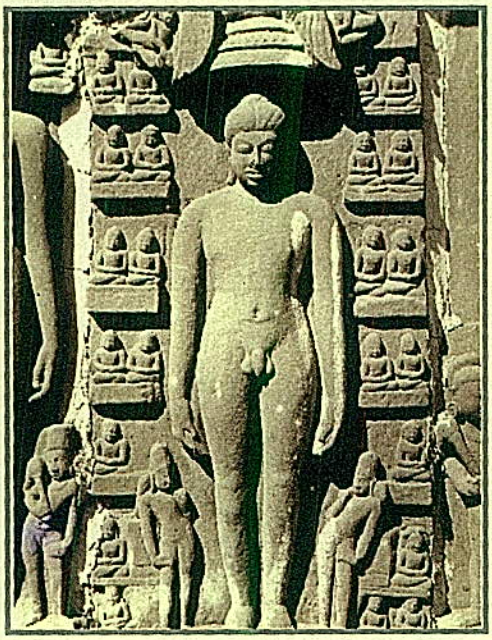

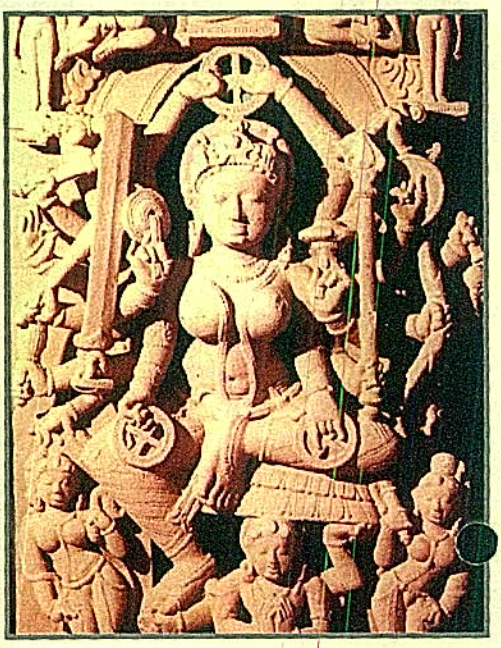

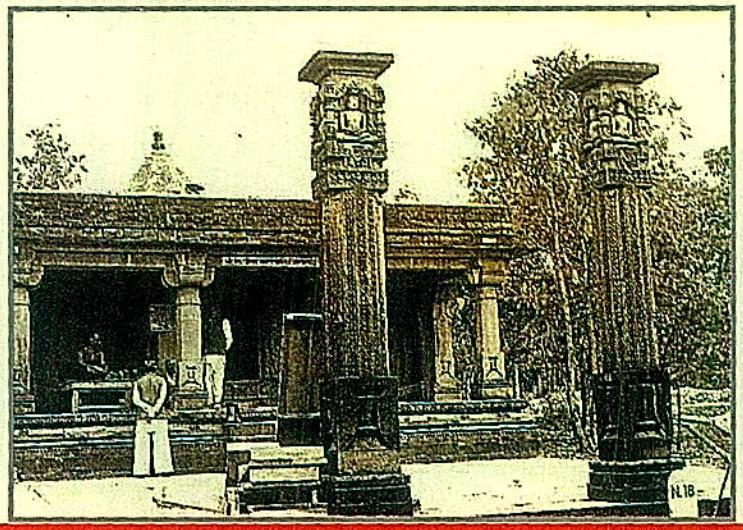

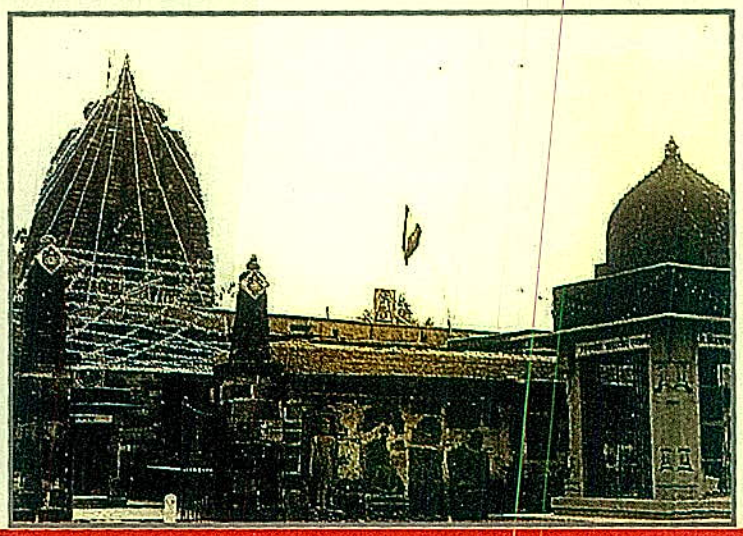

धन से सुविधायें मिल सकती हैं सुख नहीं।

देवगढ़ क्षेत्र की झलकियाँ

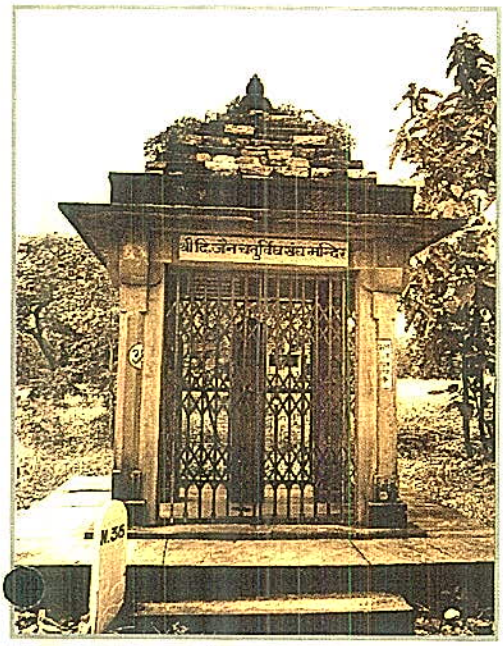

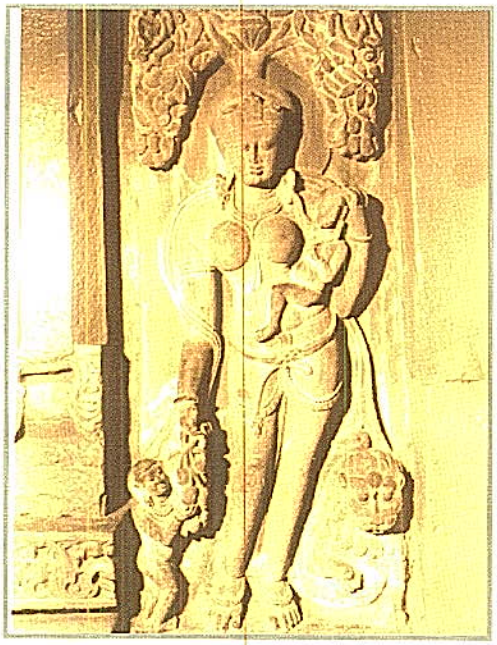

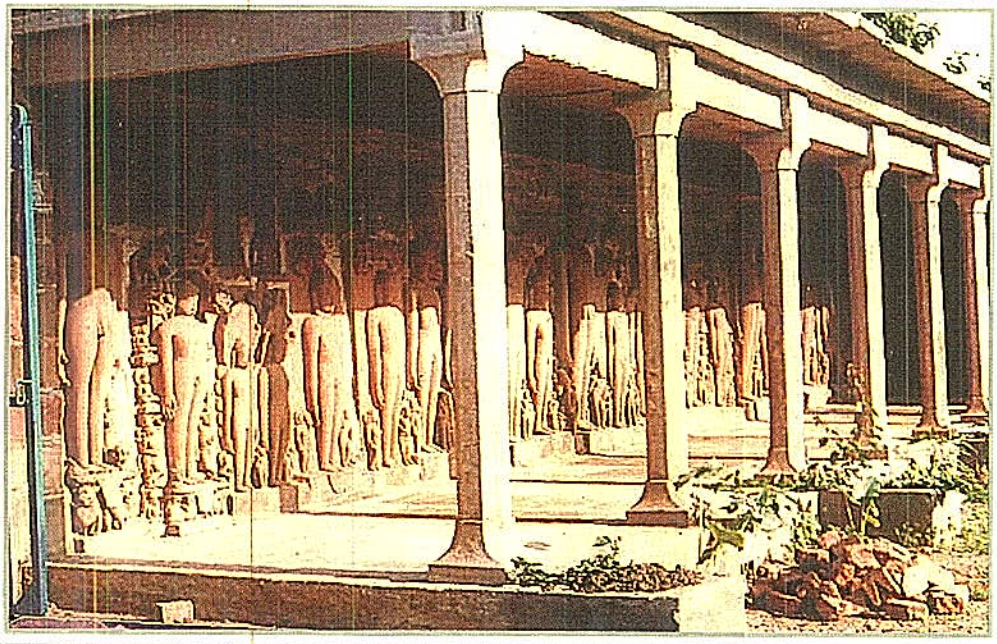

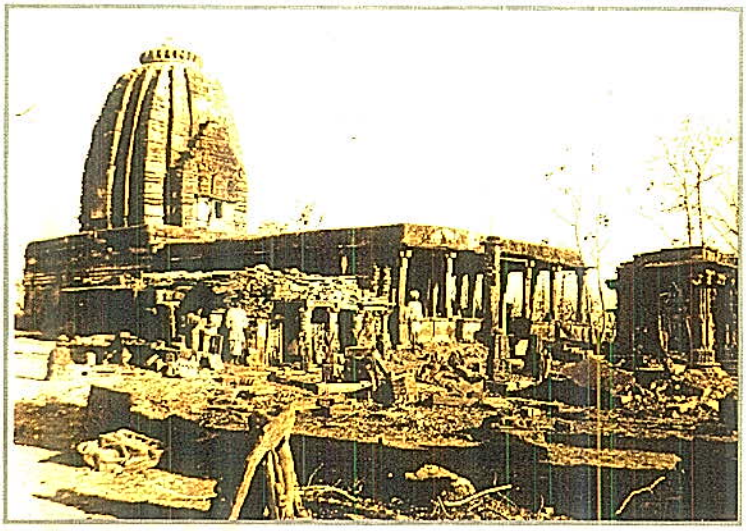

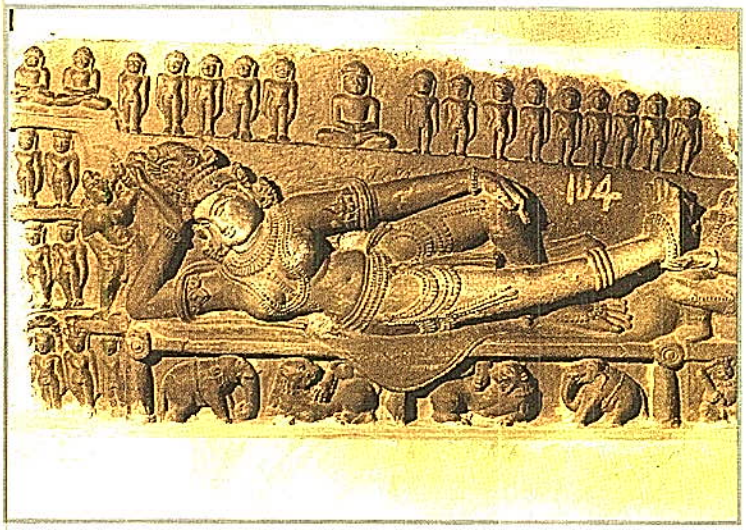

सभी तीर्थ हमें आत्मोन्नति की प्रेरणा देते हैं।

२. दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्रों की अतिशयकारी एवं चमत्कारी प्रतिमाओं का आस्थागत प्रचार-प्रसार होना चाहिए ताकि समाजजन उसके प्रति आकर्षित हों और तीर्थों पर आवागमन बढ़े।

३. दिगम्बर जैन तीर्थों की भूमि को परकोटा (परिसर) बनाकर संरक्षित करना चाहिए।

४. तीर्थक्षेत्रों पर सुव्यवस्थित धमशाला एवं भोजनालय की व्यवस्था होना चाहिए।

५. तीर्थक्षेत्रों पर धार्मिक गतिविधियों के साथ-साथ धार्मिक, नैतिक, लौकिक शिक्षा के विद्यालय होना चाहिए।

६. तीर्थक्षेत्रों की देखरेख हेतु प्रबन्ध समितियों में सक्षम एवं योग्य सेवाभावी कार्यकर्त्ताओं को स्थान मिलना चाहिए।

७. तीर्थक्षेत्रों का इतिहास लेखन होना चाहिए। उनकी महत्ता का प्रचार-प्रसार होना चाहिए।

मुनिपुङ्गव श्री सुधासागर जी महाराज ने देवगढ़ तीर्थक्षेत्र के जीर्णोद्धार के पश्चात् पत्रकार वार्ता में पत्रकारों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए तीर्थ जीर्णोद्धार विषयक दृष्टि के विषय में कहा था कि तीर्थ जीर्णोद्धार के लिए साधु तो केवल आशीर्वाद एवं उपदेश देता है, कार्य तो समाज ही करती है। सम्पूर्ण भारतवर्ष की दिगम्बर जैन समाज तीर्थ जीर्णोद्धार के लिए सहयोग कर रही है। तीर्थ जीर्णोद्धार संस्कृति की सुरक्षा के लिए है। प्राचीन संस्कृति जितनी सुरक्षित रहेगी उतना ही हमारा धर्म भविष्य में मजबूत रहेगा; ठीक उसी तरह जिस तरह नींव के मजबूत होने पर महल अधिक समय तक टिका रहता है। मेरी भावना है कि सम्पूर्ण भारतवर्ष के तीर्थक्षेत्रों की सुरक्षा हो, यदि वहाँ मन्दिर या मूर्तियों के जीर्णोद्धार की आवश्यकता है तो वहाँ जीर्णोद्धार हो। मैं बिना किसी संकोच के इस कार्य के लिए अपना आशीर्वाद एवं उपदेश दूंगा। साधु तो अतिथि होता है, उसके रुकने और विहार करने का कोई निश्चित समय नहीं होता। अतः मैं स्वयं कहीं रहकर जीर्णोद्धार करवाऊं; यह संभव नहीं है। किन्तु जहाँ प्रेरणा एवं सान्निध्य की आवश्यकता होगी वहाँ मैं वैसा करूंगा। मेरी भावना है कि जर्जर जिनप्रतिमाओं का जीर्णोद्धार हो, उन्हें उच्चासन पर विराजमान कर पूज्यता के योग्य बनाया जाए। हम कहने मात्र के लिए जिनभक्त न बनें बल्कि जिनायतनों की सुरक्षा के लिए सन्नद्ध भी रहें।

सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड में तीर्थंकर श्री शांतिनाथ भगवान् , श्री कुन्थुनाथ भगवान् , श्री अरनाथ भगवान् की त्रय-त्रय प्रतिमाएं प्राप्त होती हैं उनसे हमें शांति और साथ-साथ रहने की प्रेरणा मिलती है। हमारा समाज भी चाहे तो हमारे सभी तीर्थ सुरक्षित-संरक्षित और आदर्श तीर्थ बन सकते हैं।

इसतरह मुनिपुङ्गव श्री सुधासागर महाराज का तीर्थ जीर्णोद्धार के प्रति व्यापक दृष्टिकोण है। इस दृष्टिकोण का मूर्तिमान स्वरूप हमें उनकी प्रेरणा से जीर्णोद्धारित श्री दिगम्बर जैन मंदिर संघीजी, सांगानेर-जयपुर, श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पद्मपुरा (जयपुर), श्री दि.जैन पुण्योदय अतिशय क्षेत्र जैनागढ़ (बजरंगढ़), जिला-गुना, म.प्र., श्री दिगम्बर जैन जैन मन्दिर नसियां जी,महरौनी, श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र रैवासा (सीकर), श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, बैनाड (जयपुर), श्री दि.जैन अतिशय क्षेत्र बिजौलियां (भीलवाड़ा), श्री ।५. जैन सुदर्शनोदय तीर्थक्षेत्र आवां (टोंक), श्री दि.जैन अतिशयक्षेत्र ध्यानडूंगरी (भिण्डर), श्री आदिनाथ दि. जैन नसियां, (टोंक), श्री दि. जैन अतिशय क्षेत्र गोलाकोट (म.प्र.), श्री मुनिसुव्रतनाथ-मंगलोदय दि. जैन तीर्थ रुठियाई (जिला-गुना), म.प्र., श्री दि. जैन मन्दिर, धरनावदा (जिला-गुना), श्री दि.जैन मन्दिर, साडा कॉलोनी, राघौगढ़ (जिला-गुना), श्री संभवनाथ जिनालय, सुधासागर धाम, राघौगढ़ (जिला-गुना), श्री दि. जैन शुभोदय अतिशय क्षेत्र, बीनागंज (जिला-गुना), श्री दि. जैन अतिशय क्षेत्र, दादावाड़ी नसियां, कोटा (राज.), श्री दि. जैन मन्दिर, इन्दरगढ़, श्री दि.जैन मन्दिर अतिशय क्षेत्र चमत्कार जी (सवाई माधोपुर), श्री दि.जैन सर्वतोभद्र अतिशयक्षेत्र, रणथंभौर (सवाईमाधोपुर), आचार्य श्री ज्ञानसागर समाधिस्थ नसीराबाद (अजमेर), श्री अभिनन्दननाथ दि.जैन मन्दिर,ललितपुर (उ.प्र.) आदि प्राचीन/नवीन तीर्थों का जीर्णोद्धार एवं नवस्थापना करके भारतवर्ष में इतिहास रच दिया है। आज वे सफल जीर्णोद्धारक आध्यात्मिक संत माने जाते हैं। उनकी प्रसिद्धि में उन पर उनके गुरु का आशीष, मूलाचार के अनुरूप मुनिचर्या, चारित्रपालन, अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग और परीषह जय के साथ-साथ तीर्थजीर्णोद्धार एवं विकास की सम्यक् प्रेरणा है। उनकी इन भावनाओं का समाज द्वारा अनुकरण भी किया जा रहा है। सम्बन्धित तीर्थक्षेत्रों की प्रबन्ध समितियों के साथ-साथ भारतवर्षीय जैनसमाज भी आज उनके पथ एवं प्रेरणा का अनुगमन कर रहा है। हम उनकी भावनाओं का सम्मान करते हुए उनकी प्रशस्त प्रेरणा को प्रणाम करते हैं।

किं न स्यात्साधुसंगमात् (उत्तरपुराण, 62, 350)। अर्थ साधु के समागम से क्या नहीं होता है। अर्थात सभी कार्य व मनोरम सफल हो जाते हैं।

विश्व की सबसे प्राचीन धरोहर तीर्थोदय अतिशय क्षेत्र गोलाकोट जी की विकास गाथा

ऋषियों की भूमि भारतवर्ष के मध्यप्रदेश में बुंदेलखण्ड का दैदीप्यमान किन्तु उपेक्षित रहा गोलाकोट आज पूरी दुनिया में तेजी से उभरकर आया है। शिवपुरी जिले की तहसील खनियॉधाना से 8 कि.मी दूर 1 कि.मी ऊँची पहाडी पर स्थित अत्यन्त प्राचीन पाषाण निर्मित जिनालय में विराजमान है विश्व की सर्वप्राचीन प्रतिमा श्री आदिनाथ स्वामी की; पुरातत्विदों एवं इतिहासकारों के अनुसार यह प्रतिमा लगभग 3000 वर्ष पुरानी है, प्रतिमा जी की प्राचीनता का प्रमाण दर्शन करते ही मिल जाता है ।

उक्त तीर्थोदय क्षेत्र जिन पहाड़ियों पर स्थित है उनके चारों ओर गोलाई के रूप में पर्वत श्रृंखला इसे घेरे हुए जो प्राकृतिक रूप से एक कोट का निर्माण करती है। अतः इसका नाम गोलाकोट रखा गया पहाडी में तलहटी में एक सुन्दर सरोवर है यहॉ की प्राकृतिक छटा अत्यन्त मनोहारी है पहाडों पर लगभग 35 बीघा के परिसर में क्षेत्र विस्तृत है सुन्दर बाबडी भी पहाड़ी पर जिसमें 12 माह आश्चर्यजनक रूप से पानी भरा रहता है जबकि पूरी पहाड़ी पर पानी नहीं है पहाड़ी एकदम वंजर है।

सैकड़ों वर्षों से जैन संस्कृति की यह महान धरोहर उपेक्षा का शिकार थी किसी भी साधु संस्था या श्रेष्ठी की दृष्टि इस क्षेत्र पर नहीं गई जिन लोगों ने नजर डाली भी सो वे अपने पंथवाद और पद की जीजिविषा में केवल कोर्ट कचहरी की लड़ाइयॉ ही लडते रहे, विवादित ट्रस्ट कमेटी के रहते क्षेत्र उपेक्षित रहा ही साथ ही इतनी प्राचीन धरोहर असुरक्षित भी पड़ी रही । परिणामस्वरूप सन् 1998 पुराचोरों मौका मिला और उन्होंने एक साथ एक ही रात में एक साथ 46 मूर्तियों के सिर काट डाले। इतिहास में इतनी बड़ी विध्वंशकारी घटना औरंगजेब के बाद पहली बार घटित हुई थी। इस घटना ने पूरे भारत की जैन समाज को हिलाकर रख दिया । इस घटना से गोलाकोट क्षेत्र चर्चा में जरूर आया मूतियों के सिर भी बरामद हो गये परन्तु तब तक हम अपनी बहुत बड़ी निधि गंवा चुके थे ।

सन् 2007 में आचार्य गुरूवर श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के आशीर्वाद से खनियॉधाना में पर्युषण पर्व पर बालब्रह्मचारी श्री विनयभैया जी का आगमन हुआ। पर्व पूर्ण कर वे गोलाकोट जी के दर्शन करने गये। क्षेत्र की दशा देखकर उनकी आत्मा रो पड़ी। क्षेत्र के जीर्णोध्दार का संकल्प भी अन्तर्मन में जागा। सन् 2008 से 2013 तक भैया जी के मार्गदर्शन में मन्थर गति से क्षेत्र के विकास एवं सुरक्षा का काम चलता रहा लेकिन अधिकांश समय पंथवाद के विवादों में ही व्यर्थ जाता रहा । जो भी हो किन्तु इस प्राचीन क्षेत्र को मुनि विरोधी तत्वों के हाथों से मुक्त करा लिया गया क्षेत्र अत्यंत जर्जर था जब तक दस बीस करोड़ रूपये खर्च ना किये जावे तव तक कुछ पूरा समाज यही सोचता था कि इस क्षेत्र पर कुछ नहीं हो सकता, क्योंकि समाज के पास तो इतना धन तो है नहीं किन्तु भैया जी समाज का आत्मविश्वास जगाते और बढाते रहते थे । भैया जी बहुत बड़े कल्प वृक्ष पर अपनी निगाह जमाये बैठे थे । 2007 से वे लगातार आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के समक्ष गोलाकोट क्षेत्र की जीर्ण किन्तु प्राचीनता की विवेचन प्रस्तुत करते रहते थे परंतु न जाने क्यों बहुतेरे प्रयास करने के बाद भी कोई बड़ा सानिध्य नहीं हो पा रहा था ।

वर्ष 2013 मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी महाराज ललितपुर वर्षायोग में रथ धनारत थें। 8 अगस्त रात्रि कुछ डकैत तीर्थयात्री बनकर क्षेत्र पर आये और तीनों चौकीदार और पहरी को कमरों में बंद कर प्रभु पार्श्वनाथ स्वामी की अतिप्राचीन मनोज्ञ 22 क्विंटल वजन की दो प्रतिमायें कटटे की नोक पर लूट कर ले गए। रातों रात ही उन डकैतों ने सवाईमाधोपुर जिले के नये गॉव में एक मकान में उन मूर्तियों को रख दिया ।

प्रातःकाल होते–होते एक बार फिर पूरे क्षेत्र में हडकंप मच गया । पुरातत्व महत्व की इन मूर्तियों की डकैती की चर्चा सर्वत्र फैल गई तत्कालीन जिलाधीश श्री आर.के जैन , पुलिस अधीक्षक श्री आर.पी सिंह, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री अमित सिंह जी सहित सम्पूर्ण शिवपुरी जिले का पुलिस बल एकत्रित हो गया । मौन आन्दोलन प्रारम्भ हो गया गॉव – गॉव में तलाश शुरू हो गई। भारी बारिश में भी नवयुवक पानी से उफनते नदी और तालाबों में डूब डूब कर मूर्तियॉ तलाशते रहे । प्रशासन भी सतर्क था एस.आई.टी गठित कर दी गई थी । जॉच तेजी से चल रही थी । लगातार 19 दिनों तक 17 गॉव की जैन समाज ने अपने सारे व्यवसायों को विराम दे दिया विरोध चर्म पर पहुँचता जा रहा था । आखिर 19 दिनों बाद उक्त दोनों प्रतिमाएँ सुरक्षित प्राप्त हो गई सर्वत्र खुशी की लहर दौड़ गई । ड़कैत भी पकड़े गए । मामला ड़कैती पर था। अतः गंभीर धाराएँ उन पर लगी । सारी समाज प्रतिमाओं के शुध्दिकरण हेतु ललितपुर की और दौड़ पडे पहली बार मुनि श्री ने उन प्रतिमाओं का दर्शन किया और सहज ही उनके मुख से निकल गया – "अभी तक तो भक्ति ही लेने के लिए आते थे परन्तु आज भगवान ही आ गये अब तो मुझे गोलाकोट जाना ही

Anger burns the nature of man just like fire burns things.

पड़ेगा।"

वर्षायोग के उपरान्त मुनि श्री का ससंघ आगमन हुआ लगभग 45 मिनट तक मुनि श्री मूलनायक भगवान की प्रतिमा को एक टक निहारते रहे गर्भ गृह के बाहर हजारों भक्तों की भीड़ जमा थी। जय–जयकार के नारे गूंज रहे थे। सहसा मुनि श्री बाहर आये और प्रवचन सभा में तब्दील उस भीड़ को संबोधित करते हुए बोले –' इतनी प्राचीन और ऊँर्जावान मूर्ति के दर्शन मैंने पहली बार किये है। सचमुच जो भी श्रद्धालु श्री आदिनाथ की इस प्रतिमा का एक बार भी मन से दर्शन कर लेगा निघाति और निकाचित कर्मो की निर्जरा हुए बिना नही रहेगी।' बस यही वो क्षण था जिसका इस क्षेत्र को सदियों से इन्तजार था । मुनि श्री के सान्निध्य में क्षेत्र के जीर्णोध्दार का कार्य प्रारम्भ हुआ। सम्पूर्ण 35 बीघा में 8 फिट ऊँची ढाई फिट चौडी पत्थर की सुरक्षा दीवार खड़ी की गई बाबड़ी का जीर्णोध्दार हुआ। प्रशासन द्वारा बिजली प्रदान की गई एवं 50 हजार लीटर की पानी की टंकी निर्मित की गई । सड़क मार्ग एवं सीढियां तो पहले ही तैयार कर लिया गया था । और एक दिन मुनि श्री की ऐसी दिव्य देशना खिरी की भक्तों ने मूलनायक मंदिर , त्रिकाल चौबीसी नन्दीश्वर, समवशरण मंदिर, और अतिथिशाला बनाने की योजना बना डाली। अधिकांश पुण्यार्जक भी तत्काल तैयार हो गए। विकास की धारा बह पड़ी और मुनि श्री ने 365 तीर्थ रक्षण बनाने की योजना बताई और ढेरों तीर्थरक्षक तैयार हो गए। एक अत्यन्त पिछड़ा उजड़ा सा तीर्थ मुनि श्री की पदरज् पाकर तीर्थ शिरोमणि बन गया । हजारों यात्री क्षेत्र पर आने लगे पूरे भारत में तीर्थोदय अतिशय क्षेत्र जाना जाने लगा । मुनि श्री ने बताया कि यहाँ की प्रतिमा इतनी ऊँर्जावान है कि कोई भी श्रावक अपनी कैसी भी समस्या लेकर यहाँ आवे और शांतिधारा पर लेवे तो वह संकटमुक्त हुए बिना नही रह सकता । यह बात अतिशयोक्ति भी नही थी । आज पिछले तीन वर्षों में देशभर के प्रतिदिन सैकड़ों श्रावक क्य में लगकर शॉति धारा करने आते हैं। और अपनी हर समस्य मुक्ति पाते है। जिस क्षेत्र पर वर्षो – वर्षो तक एक भी स्थानीय या बाहर का तीर्थयात्री नही आता था। वही आज हजारों यात्रियों की भीड़ उमड़ी पड़ रही है। यह देन है। मुनि पुगंव श्री सुधासागर जी महाराज की ।

पिछले सोलह वर्षो से चल रहे कोर्ट कचहरी के विवाद को भी मुनि श्री ने अत्यन्त कुशलतापूर्वक सुलझाया वहीं उनके सानिध्य में एक सशक्त कमेटी का गठन भी हुआ इतना ही नहीं पूरे भारत का एकमात्र गोलाकोट क्षेत्र ऐसा है। जिसे वनविभाग ने छः माह के भीतर 35 वीघा जमीन का क्षेत्र के ही नाम से भूमि पटटा प्रदान किया फिलहाल क्षेत्र पर विकाश कार्य तेजी से चल रहे है। यहाँ मूल नायक श्री 1008 आदिनाथ स्वामी जी पद्मासन में विराजमान है। उनके दोनों ओर दो खड्गासन में पार्श्वनाथ स्वामी जी की प्रतिमाएँ हैं। दूसरी वेदी पर प्रभु श्री मुनिसुब्रतनाथ स्वामी जी खड्गासन में दोनों और 3 – 3 प्रतिमाएँ खड्गासन में ही पार्श्वनाथ स्वामी की है। प्राचीन गर्भगृह में भी अति मनोज्ञ सात प्रतिमाएँ विराजमान हैं। एक नवीन वैदिका पर विशाल नेमीनाथ स्वामी एवं अष्टधातु की तीन अन्य प्रतिमाएँ विराजमान है। यह मनुहारी तीर्थ विश्व के सम्पूर्ण तीर्थ यात्रियों को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। अपनी ऊँर्जा प्रदान करने के लिए यहाँ का भूकम्प रोधी स्वास्तिक जिन के गर्भ में पंचतीर्थो की मिटट्ी 1008 कलशों में भरकर रखी गई है। सहज आकर्षण का केन्द्र है। 14 – 15वीं शताब्दी की 24 तीर्थंकरों की प्राचीन चरण पादूकाएँ हमारे पापों का प्रक्षालन करती है। वही तीर्थयात्रियों के मन को यहाँ की प्राकृतिक छटा आनन्द प्रदान करने में पूर्ण सक्षम है। यहाँ यात्रियों के आवास एवं भोजन की पूर्ण व्यवस्था है।

रबीन्द्र कुमार जैन पंचायत सचिव

परोपकारी के हाथ का धन उस वृक्ष के समान है जो औषधियों का सामान देता है और सदा हरा बना रहता है (तिरुवल्लूर)

अतिशय क्षेत्र गोलाकोट जी के जिनबिंब

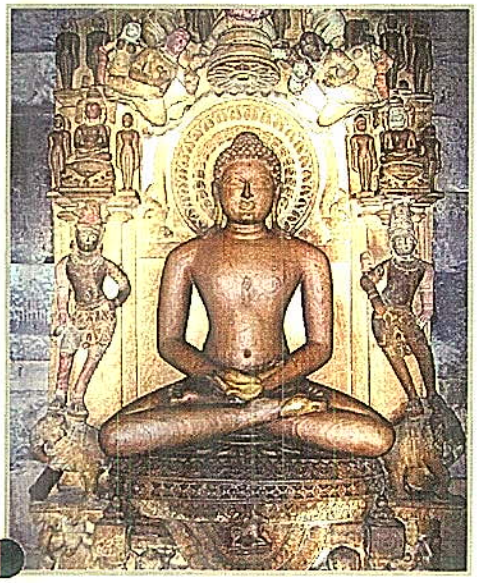

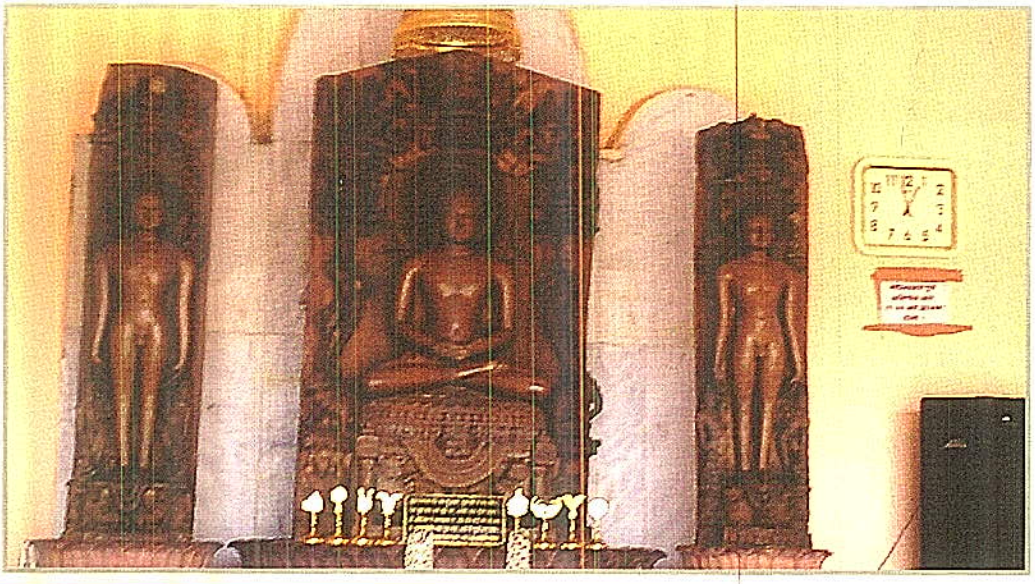

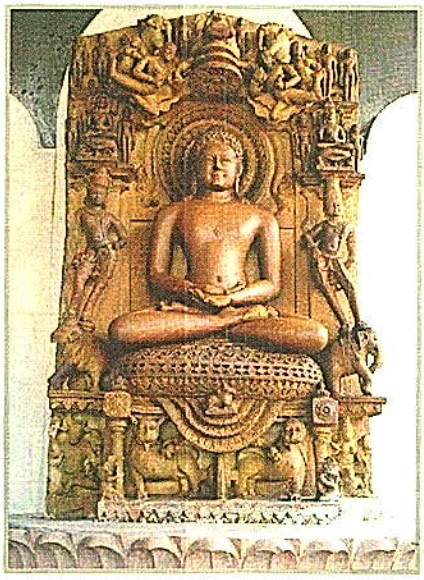

जिसमें जिनदेव विराजमान हैं, वह तीर्थ है (उत्तरपुराण 54, 5)

पुण्योदय अतिशय क्षेत्र बजरंगगढ़ जी की विकास गाथा

– देवों द्वारा रात में होती है पूजा–अर्चना
– शांतिनाथ भगवान का अतिशय

संत शिरोमणि आचार्य प्रवर 108 श्री विद्यासागरजी महाराज के आशीर्वाद एवं परमपूज्य मुनि पुंगव 108 श्री सुधा सागरजी महाराज के मार्गदर्शन में क्षेत्र पर जो नव निर्माण / जीर्णोद्धार कार्य किया जा रहा है उसकी जानकारी इस प्रकार है -

1. जीर्णोद्धार के पूर्व क्षेत्र पर वर्ष भर में लगभग 15 से 20 हजार यात्री आते थे जिनकी संख्या बढ़कर लगभग 1 लाख प्रतिवर्ष हो गई है एवं श्रीजी का अभिषेक एवं पूजन करने वालों की संख्या जो कि नगण्य थी वह वर्तमान में प्रतिदिन लगभग 175 श्रावक अभिषेक, शांतिधारा एवं पूजन करते हैं जिसमें गुना सहित आसपास के कस्बे, राधौगढ़, आरोन, रूठियाई आदि के लोग भी सम्मिलित हैं। गुना एवं अन्य कस्बों से प्रतिदिन क्षेत्र की बस एवं वाहन के साथ एवं निजी वाहनों से ही लोग आते हैं। पूजन उपरांत सभी पुजारियों को निःशुल्क स्वल्पाहार की व्यवस्था की जाती है। जिले के बाहर से वर्ष भर में लगभग 02 लाख से ज्यादा लोग पिछले 02 वर्षों में यात्री दर्शनार्थ हेतु एवं वहाँ रुककर अपनी आगामी यात्रा करने के लिए आ चुके हैं।

2. क्षेत्र की आमदनी विग 02 वर्षों में अनेक गुना बढ़ गई है।

3. नव निर्माण एवं जीर्णोद्धार के लिए क्षेत्र पर चल रहे कार्य की प्रगति को देखते हुए लोगों को स्वाभाविक रूप से दान करने की इच्छा जाहिर होती है। साथ ही सहयोग राशि के रूप में क्षेत्र के स्थायी शिरोमणि संरक्षक, परम संरक्षक एंव संरक्षक सदस्यों द्वारा क्षेत्र को सहयोग दिया जाता है एवं तीर्थक्षेत्र जीर्णोद्धार में आदरणीय श्री अशोक जी पाटनी, आर.के.मार्बल (किशनगढ़) के द्वारा विशेष सहयोग दिया जा रहा है।

4. पूज्य गुरुदेव के निर्देशानुसार पुरातत्व को दृष्टिगत रखते हुए मूलनायक भगवान श्री शांतिनाथ स्वामी, श्री कुंथुनाथ स्वामी, श्री अरहनाथ स्वामी की वेदी एवं मूर्तियाँ जिस गुफा में विराजमान हैं उस गुफा एवं शिखर को यथावत स्थिति को अग्रसित करते हुए नवीन मंदिर का विस्तार भी किया जा रहा है। निर्माण में लोहे का प्रयोग नहीं किया जा रहा है, सम्पूर्ण ईटों द्वारा आर्च बनाकर पुरानी तकनीक के साथ प्रगतिरत हैं। मुख्य मंदिर के साथ, नंदीश्वर द्वीप समवशरण एवं समिति का लक्ष्य सम्पूर्ण कार्य 2018 तक पूर्ण करने का है।

क्षेत्र पर मंदिर जीर्णोद्धार के साथ संतशाला का निर्माण एवं यात्रियों ठहरने हेतु सर्वसुविधा युक्त ए.सी., नोन ए.सी. के साथ आधुनिक भवनों का निर्माण हो चुका है। क्षेत्र पर भोजन, स्वल्पाहार की समुचित व्यवस्था है।

5. क्षेत्र के बारे में अन्य जानकारी क्षेत्र की बेवसाईट पर www.punyodayaguna.in/www.facebook.com/punyodayguna उपलब्ध है। साथ में क्षेत्र का पेज भी है, जिस पर लगभग 02 लाख लोग प्रतिमाह देखते हैं।

6. उक्त जानकारी हमारे ज्ञान एवं विश्वास से सही है। अन्य कोई जानकारी इससे अधिक चाहिए तो पुण्योदय अतिशय क्षेत्र बजरंगगढ़ के नाम बनी हुई वेबसाईट्स से एकत्रित की जा सकती है।

क्षेत्र पर दो मंदिर और हैं उनके विस्तार की भी योजना है।

- प्रदीप जैन
सचिव - बजरंगगढ़ क्षेत्र

न्यायनिष्ठ की सम्पत्ति कभी कम नहीं होती। वह दूर तक पीढ़ी दर पीढ़ी चली जाती है (तिरुवल्लूर)

अतिशय क्षेत्र बजरंगगढ के जिनबिंब

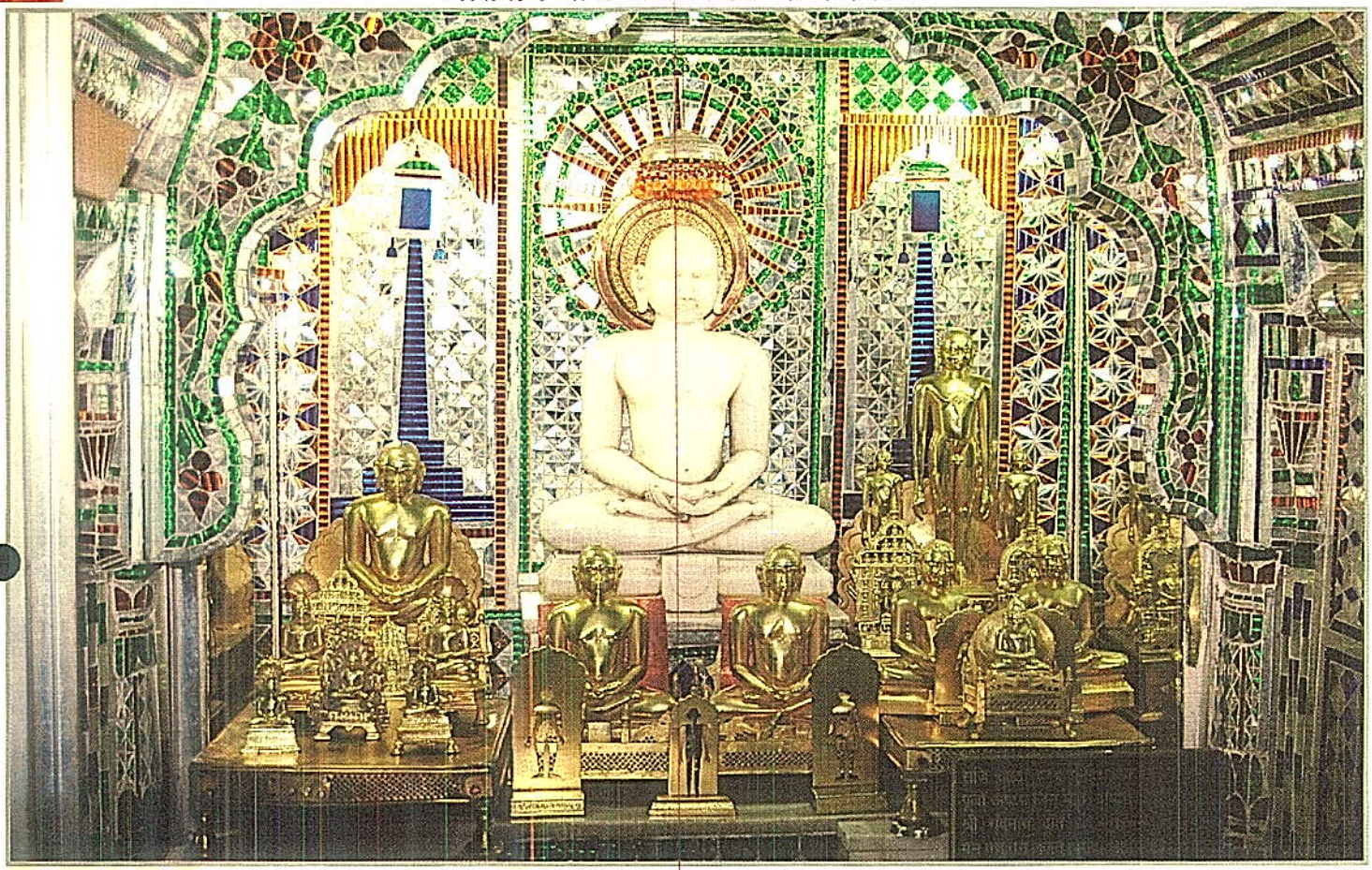

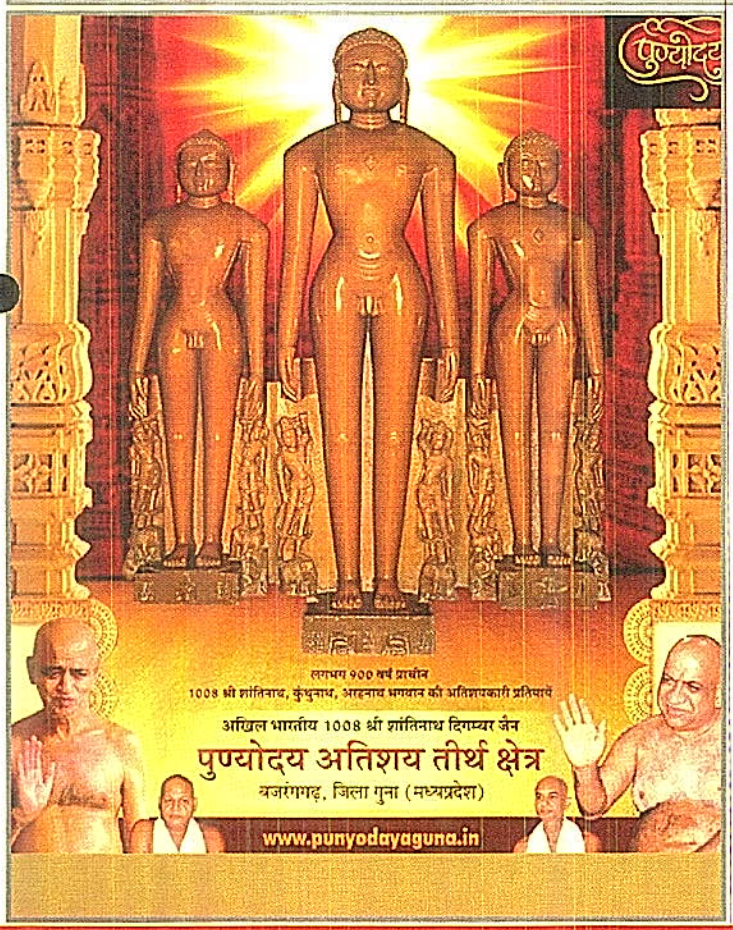

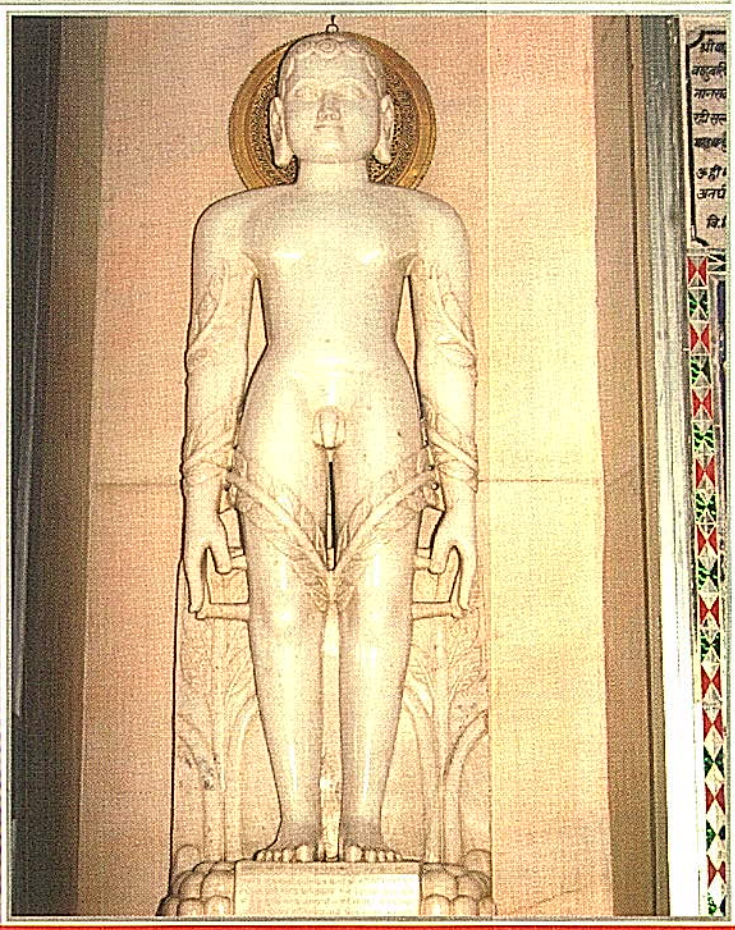

धन से सुविधायें मिल सकती हैं सुख नहीं।

जिसके सान्निध्य में जन्म नहीं दीक्षा-दिवस मनता है : मल्लप्पा परिवार की विरक्ति का वृत्तांत

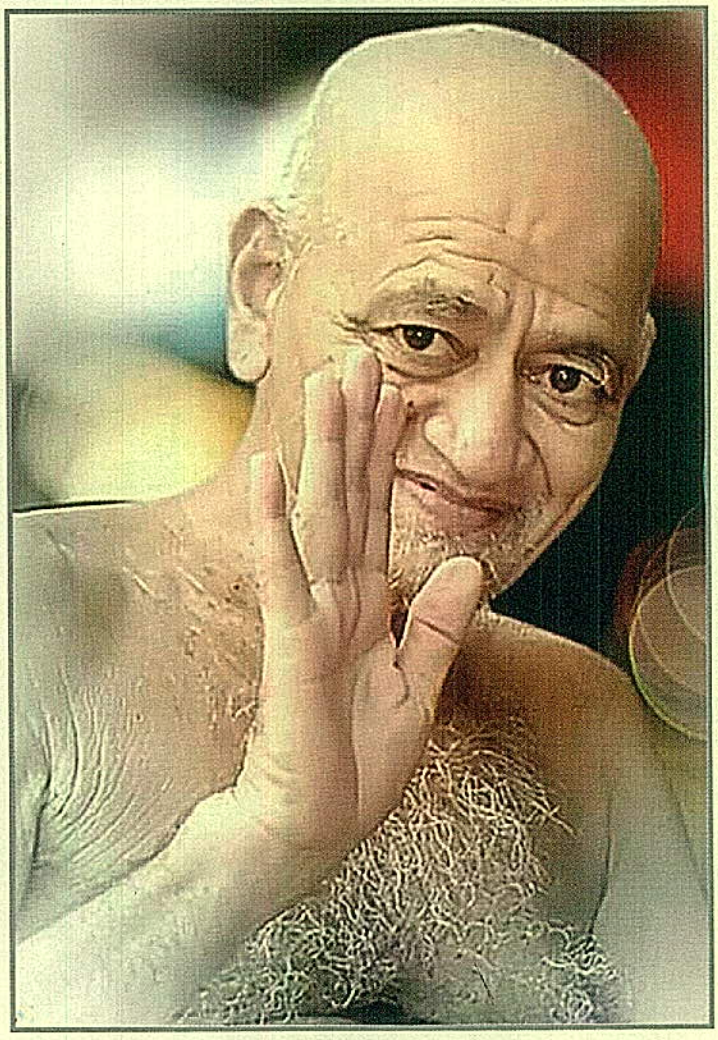

भगवान महावीर स्वामी की मूलाम्नाय में महाश्रमण श्री कुन्दकुन्दाचार्य जी की परम्परा में श्रमण संस्कृति के महान उन्नायक, रत्नत्रय के उत्कर्षक, श्रुत-आराधक, समयसार एवं मूलाचार के मूर्तिमान, आध्यात्मिक संत, भारत राष्ट्र की गरिमामयी ऋषि परम्परा के धर्मप्राण और लोकप्रिय विश्व विख्यात महाकवि, विशाल संघ के महानायक जैनाचार्य 108 श्री विद्यासागर जी महा मुनिराज जी की आत्मान्वेषी, इष्टोपदेशी अनुपम कृति महाकाव्य 'मूकमाटी' है। आप 275 से अधिक बाल ब्रह्मचारियों के दीक्षा प्रदाता हैं। जिनके सान्निध्य में जन्म नहीं 'दीक्षा दिवस' मनता है। जो मान-सम्मान, पदवी, उपाधि और अलंकार से परे हैं। जो ज्ञानेश्वर हैं, धर्मेश्वर हैं और मुक्तेश्वर हैं, सम्यक दर्शी, सम्यक ज्ञानी और सम्यक चारित्र के धारक हैं। जो वर्तमान युग के चारित्र चक्रवर्ती प्रथमाचार्य आचार्य श्री शांतिसागरजी महामुनिराज की मोक्षमार्ग के लिए प्रशस्त निर्ग्रन्थ साधु की चतुर्थ कालीन श्रमण परम्परा पर स्वयं चल रहे हैं, उसे बढ़ा रहे हैं और गौरवान्वित कर रहे हैं।

ऐसे विद्या-सिन्धु, संत शिरोमणि विद्यासागरजी को अपने गुरु महाराज जी की स्मृति ने 'निजानुभव शतक की रचना करते-करते कवि बना दिया था।

योगीश्वर-महासंत के गृहस्थ से विरक्ति के आदर्श पथ की ओर बढ़ने का वृत्तांत अविस्मरणीय, अनुपम और अप्रतिम है :-

तपोमूर्ति विद्यासागर जी जब गुरु महाराज ज्ञानसागर जी की समाधि कराने के बाद श्री महावीर जी से विहार करते हुए सवाई माधोपुर की ओर विहार पर थे। रास्ते में ग्राम पछाल में आपकी गृहस्थ माता श्रीमती श्रीमंती जी, भाई अनंतनाथ, बहिनें शांता और स्वर्णा ने आपके दर्शन किये। माताजी और पिताजी मल्लप्पा का विचार था कि पारिवारिक जीवन, जीवन की चिंतापूर्ण यात्रा है और वासना एक अंतहीन अतृप्ति। सोचा था पुत्रियां शांता और स्वर्णा के पश्चात साधनामय जीवन बितायेंगे। किन्तु शांता और स्वर्णा चुपचाप निःशब्द भावात्मक रूप से विरक्ति के पथ पर थी। साधना के दुर्गम एवं अज्ञात पथ की कल्पना नहीं थी। अनुभूति भी नहीं थी। दोनों का लौकिक जीवन पराश्रित था। चाहती थी आचार्यश्री उन्हें आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत प्रदान कर दें। परन्तु इतना साहस नहीं था कि माता-पिता की आज्ञा का उल्लंघन कर सके। अपना अभिप्राय किसी से प्रकट नहीं किया था। प्रतीक्षा थी शुभ समय की। भैया अनंतनाथ ने दोनों बहिनों के हृदय की मौन भावना पढ़ ली थी। कह भी दिया था कि कोई व्रत लेने की भूल न करना। संयम का पथ अत्यंत कंटकाकीर्ण है, जोखिम है। दोनों बहिनों ने भैया की बात का कोई उत्तर नहीं दिया था। ग्राम पछाल में माता श्रीमंती, शांता, स्वर्णा और अनंतनाथ आचार्यश्री के दर्शन करके अभिभूत हुए। आहार के बाद शांता और स्वर्णा ने आचार्यश्री से ब्रह्मचर्य व्रत प्रदान करने की याचना की। आचार्यश्री के अधरों पर मंद-मंद मुस्कान व्याप्त हो गयी थी। बोले 'देखेंगे', और विहार कर के सवाई माधोपुर पहुंच गए। वहां शांता और स्वर्णा ने अनंतनाथ से कहा- भैया! आहार हेतु चौका लगा रहे हैं, शहर जाकर सब्जी ले आओ। अनंतनाथ के लिए सवाई माधोपुर अनजाना था। भटक गए। वापस आहार हो जाने पर लौटे। इधर आहार के पश्चात शांता एवं स्वर्णा ने आचार्य श्री से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत प्रदान करने की कामना व्यक्त की और आचार्यश्री ने व्रत प्रदान कर दिया। इस जानकारी को पा... अनंतनाथ ने स्वयं से कहा- 'मुझे पता होता तो दोनों बहिनों को सदलगा से साथ लाता ही नहीं।' इसके बाद मल्लप्पा जी सबसे छोटे पुत्र शांतिनाथ को साथ ले कर सवाई माधोपुर आ गये। दोनों पुत्रियों से व्रत धारण के विषय में पूछा तो उत्तर नहीं मिला, मौन रही। व्रत किसी निश्चित अवधि के लिए या आजीवन लिया है, पिता जी को ज्ञात नहीं हो सका। उन्होंने आचार्यश्री से कहा :- व्रत मुझसे पूछे बिना क्यों प्रदान किया। साथ ही और भी काफी कुछ बोले। इस पर आचार्यश्री मौन रहे। इसके बाद आचार्यश्री के संघ के अभिन्न भक्त कजोड़ीमल को आचार्यश्री ने निर्देश दिया कि आज रात्रि में ही ब्रह्मचारिणी शांता और स्वर्णा को साधना हेतु आचार्य श्री धर्मसागर के संघ में मुजफ्फरपुर (उत्तर प्रदेश) में छोड़ आओ। दोनों पुत्रियों का गृह त्यागी बन जाने पर मल्लप्पा और श्रीमंती जी जो स्वयं दीर्घ काल से जैन दर्शन के मर्म को समझते थे, उनके सामने गृहस्थ जीवन का कोई अर्थ शेष नहीं रह गया था। अब वे महावीर जी में श्रुत पारगामी संत, महान तपस्वी आचार्य श्रुतसागरजी के संघ में रहकर साधना करने लगे। दूसरी ओर युवा अनंतनाथ और शांतिनाथ

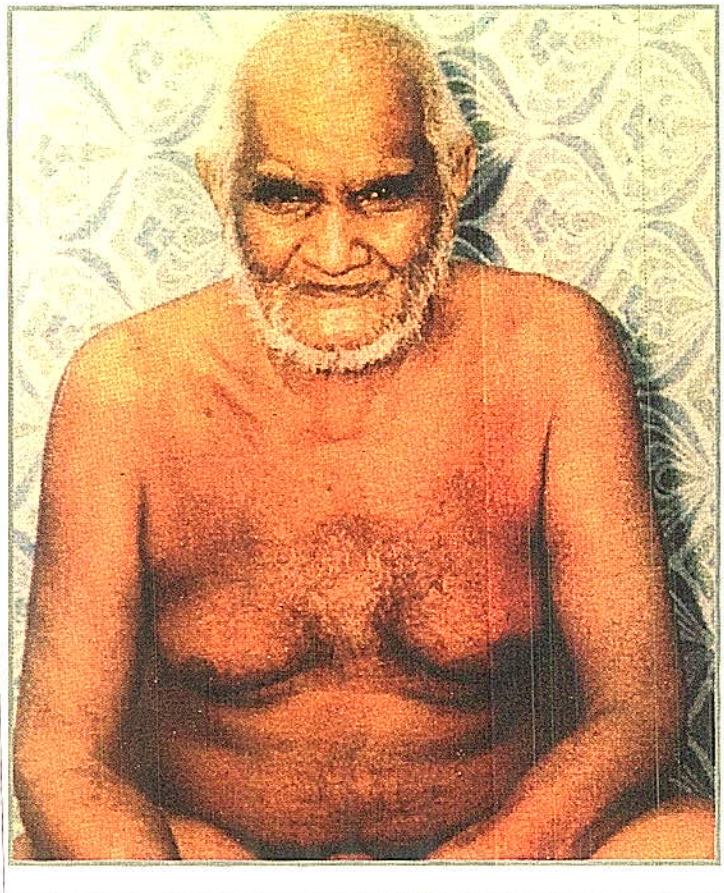

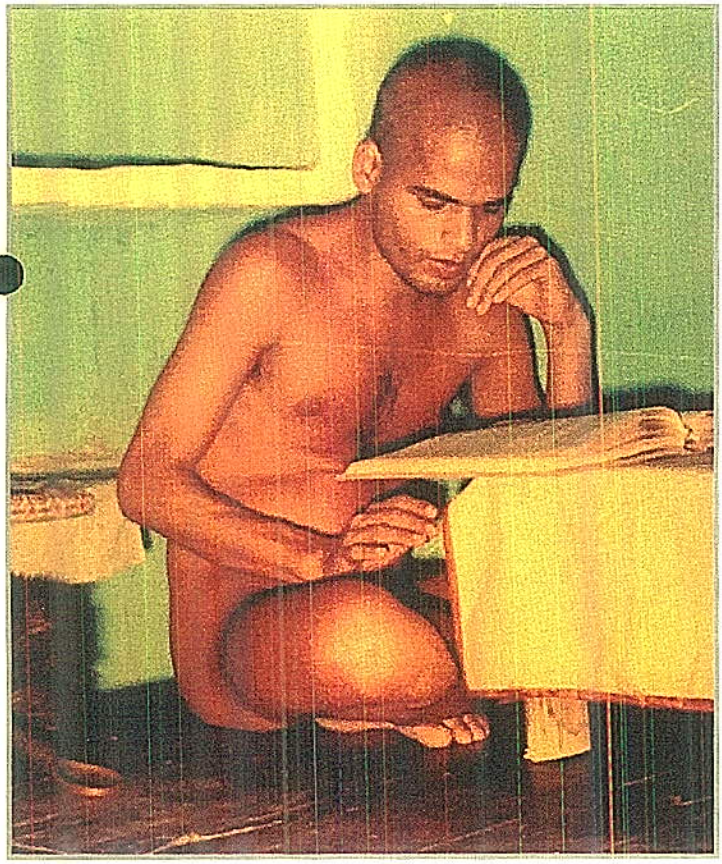

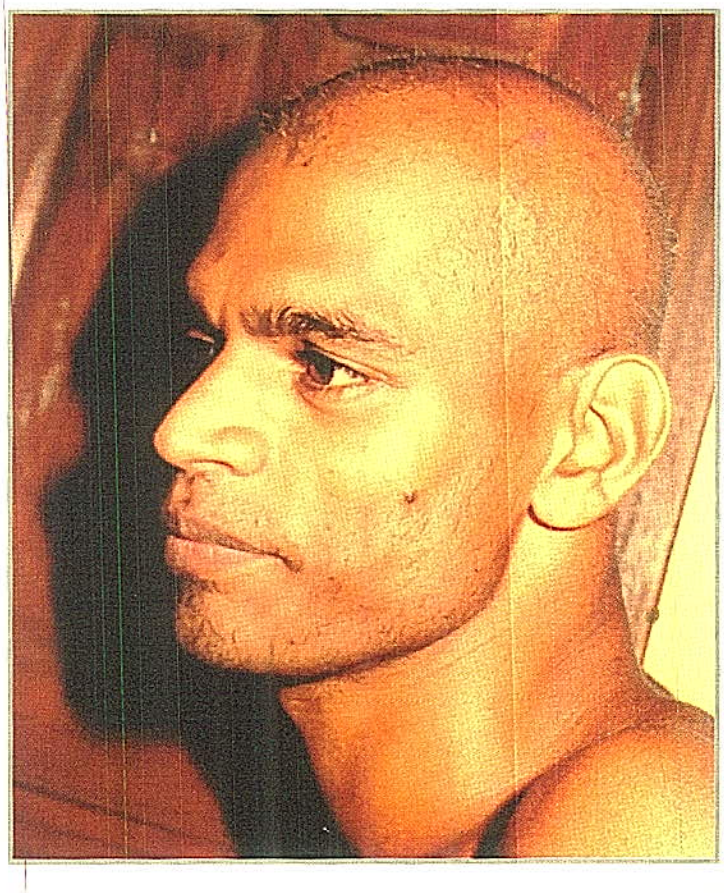

मनुष्य ने जो वस्तु छोड़ दी है, उससे पैदा होने वाले दुःख से उसने अपने को मुक्त कर लिया है (तिरुवल्लूर)

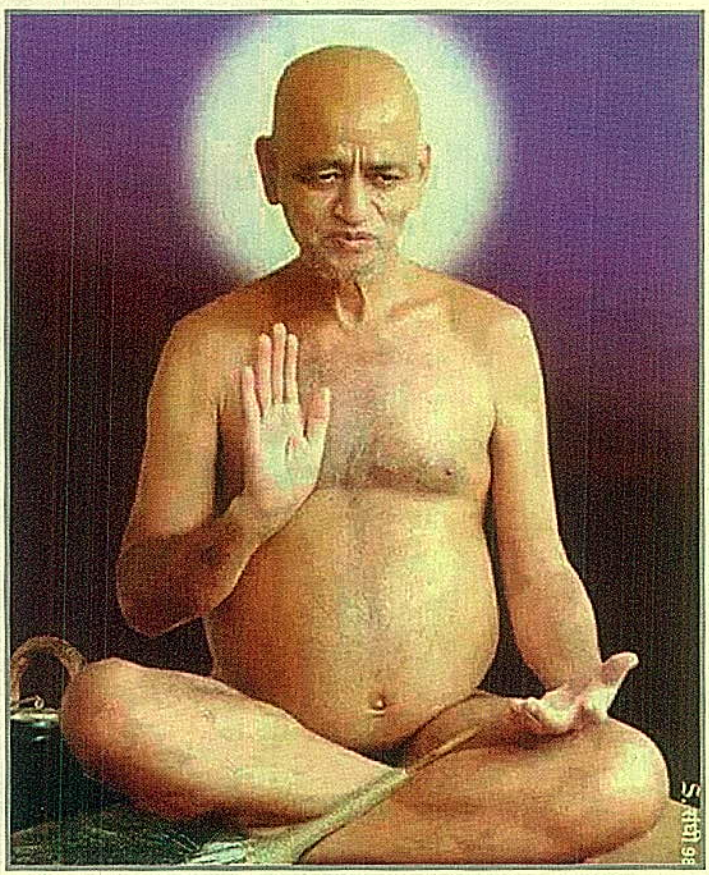

कर्तव्य विमूढ़ हो गए? माता, पिता, दोनों बहिनें धर्म की शरण में चली गयी थी। दोनों भाई घर लौटने को व्याकुल हो उठे। आचार्य श्री से घर लौटने की आज्ञा लेने गए, तो आचार्यश्री ने उनसे कहा- 'अब घर जाने का आकर्षण छोड़ो। संसार में व्यक्ति खाली हाथ आता है, अंत समय खाली हाथ लौट जाता है। मानव मात्र की यही नियति है। घर जा कर क्या करोगे? वही व्यवसाय, वही साहूकारी करोगे। अनेक जीवन लौकिक जीवन को संवारने में लगा दिए। एक जन्म आत्म कल्याण के लिए समर्पित कर देखो। मनुष्य जन्म दुर्लभ रत्न के समान है। उसे वासना के कलुषित सागर में मत फेको। मैंने जिस मार्ग का अनुकरण किया है, उस मार्ग पर चल कर तो देखो। इस मार्ग में परम शांति है। यह मार्ग मुक्ति के गंतव्य तक ले जाने की क्षमता रखता है।' इतना कह कर आचार्यश्री मौन हो गए।

यहां पर बचपन का एक वृतांत उल्लेखनीय है। अनंतनाथ, शांतिनाथ और दोनों बहिनों को विद्या भैया ने सहस्त्रनाम, तत्वार्थ सूत्र, णमोकार का महात्म और कन्नड़ के आद्यमंगलाचरण को कण्ठस्थ करा दिया था। हर रात में पढ़ कर ही सोने का नियम ही बन गया था। अब आचार्यश्री का आत्म कल्याण के मार्गदर्शन पर अनंतनाथ ने कहा- 'गुरुदेव वैराग्य क्या होता है? विरक्त जीवन में सुख-दुख की अनुभूति कैसी होती है? मुक्ति क्या होती है।? इसकी हमें कल्पना तक नहीं है। आपने जितना धर्म पढ़ाया था, बस उतना ही कंठस्थ है। माता-पिता, दोनों बहिनें आजीवन के लिए धर्म की शरण में चली गयी है। हमें आप पर पूर्ण विश्वास है। आप हमारे भविष्य को जो दिशा देना चाहें हमें स्वीकार है।' इस पर आचार्य श्री ने कहा मैंने शांति और मुक्ति मार्ग की ओर संकेत किया है। संघ में रहो। श्रमणों की दिनचर्या देखो। साधना का मार्ग अत्यन्त सरल भी है और कठिन भी। यदि दृष्टि में विरक्ति है, तो विरक्त जीवन अत्यन्त आल्हादकारी है। प्रथम वस्त्र बदलो, धोती, कुर्ता पहिनना प्रारम्भ करो। तत्काल निर्णय लेने की आवश्यकता नहीं।'

2 मई 1975 के दिन श्री महावीर जी में अनंतनाथ और शांतिनाथ को आचार्यश्री ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत की दीक्षा प्रदान की और दोनों आचार्यश्री संघ के अभिन्न अंग बन गये। आचार्य 18 दिसम्बर 1975 को दोनों को क्षुल्लक दीक्षा सिद्धक्षेत्र सोनागिरि में प्रदान की एवं नाम संस्कार किया क्रमशः योगसागर एवं समयसागर। बाद में ऐलक समयसागर को द्रोणगिरि में 8, मार्च 1980 को आचार्य श्री से मुनि दीक्षा मिल गयी। ऐलक योगसागर को 15, अप्रैल 1980 को मोराजी सागर में मुनि दीक्षा प्रदान की गयी। दूसरी ओर मल्लप्पा जी एवं श्रीमंती जी तथा शांता एवं स्वर्णा अर्थात एक ही परिवार के इन सदस्यों ने माघ शुक्ल पंचमी संवत् 2032 के पावन और अद्भुत दिवस पर दिगम्बरी दीक्षा आचार्य श्री धर्मसागरजी के संघ में ग्रहण कर ली। मल्लप्पा जी का नाम करण मुनि मल्लीसागर जी एवं श्रीमंती जी का नाम आर्यिका समयमती जी रखा गया। दोनों पुत्रियां आर्यिका बन गयी।

वर्तमान में एक ही परिवार के आठ में से सात सदस्यों का विरक्ति के आदर्श पथ को अपना लेना अद्वितीय है। श्रमण संस्कृति के इतिहास में आदितीर्थंकर ऋषभदेव भगवान के परिवार के समान आचार्यश्री ने उस विलुप्त हो गयी परंपरा को संजीवनी प्रदान की है। सम्पूर्ण परिवार प्रणम्य है। जन्म-मृत्यु से विमुक्त होने की साधना पथ पर अग्रसर है। जो ग्रंथियों से बंधा है, वह संस्कारी प्राणी है और जो निर्ग्रन्थ है वह मुक्त है।

आपका पचासवां मुनि दीक्षा विभूति विद्यासागर जी महामुनिराज जी का राष्ट्र की संस्कृति के पोषण के लिये आव्हान है :-

- अहिंसा की भूमि भारत से गो वंश का मांस और चमड़े का निर्यात बंद हो।
- गाय राष्ट्रीय प्राणी घोषित हो।
- भारतीय मुद्रा पर गाय का चिह्न अंकित हो।
- सरकार में गो संरक्षण मंत्रालय हो।
- इंडिया हटाओ-भारत बनाओ, भारतीय भाषाओं को अपनाओ।
- प्रशासन और न्याय के क्षेत्र में राजभाषा हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं को अपनाओ।
- संसद में सांसद मतदाताओं की भाषाओं में बोलें, उन्हें सम्मान दें।
- जीवन का निर्वाह नहीं निर्माण के लिए शिक्षा के क्षेत्र में प्रतिभा-स्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ की स्थापना हो।
- सभी स्तर पर शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषाएं हों।
- विदेशी भाषा अंग्रेजी की अनिवार्य पढ़ाई बन्द हो।
- गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के लिए प्राचीन मौलिक ज्ञान का आधार हो।
- ..... माता का दूध पीने से ले कर ही जो संस्कार और मधुर शब्दों द्वारा जो शिक्षा मिलती है, उसके और पाठशाला की शिक्षा के बीच संगत होना चाहिए। परकीय भाषा से वह श्रृंखला टूट जाती है- महात्मा गांधी जी

प्रस्तुति : निर्मलकुमार पाटोदी, इंदौर

देवालय में विराजित जिनदेव तीर्थ हैं - यह व्यवहार का कथन है (योगसार, दो. 4)

भीलवाड़ा में हुआ 24वां ऐतिहासिक श्रावक संस्कार शिविर

"संस्कारवान समाज ही विकास की राह पर आगे बढ़ता है सुधासागर जी"

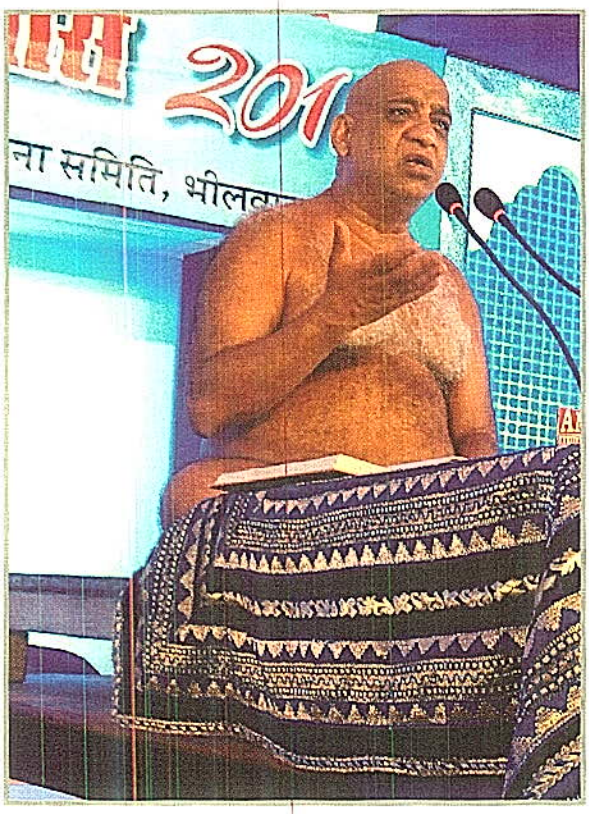

वस्त्रनगरी भीलवाड़ा (राजस्थान) में चार्तुमास कर रहे परम पूज्य संत शिरोमणी आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के परम् प्रभावक शिष्य तीर्थोउद्धारक आध्यात्मिक संत मुनि पुंगव श्री सुधा सागर जी महाराज, क्षुल्लक श्री गम्भीर सागर जी महाराज व क्षुल्लक श्री धैर्य सागर जी महाराज के सान्निध्य में 11 दिवसीय 24वें अखिल भारतीय श्रावक संस्कार शिविर का आयोजन 10 लक्षण महापर्व के दौरान किया गया। जिसमें देश के 245 नगरों से फोर्म के माध्यम से चयनित 2 हजार से अधिक शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविर के निर्देशन करने का दायित्व भीकमचंद्र पाटनी, शिविर निर्देशक हुकुम काका कोटा, शिविर निर्देशक दिनेश गंगवाल जयपुर रहे।

इस 11 दिवसीय संस्कार शिविर में शिवरार्थी पूर्णतः ग्रह त्यागकर मोबाईल, वस्त्र, आभूषण, समस्त सुख सुविधाओं को त्यागकर मात्र धोती दुपटटे में रहें जो प्रतिदिन आयोजकों द्वारा समय–समय पर उपलब्ध कराये जा रहे थे। इस शिविर में युवा, बालक, प्रौढ़, व बुजुर्ग सभी उम्रों के शिविरार्थी शामिल थे। जिन्हें आयु के हिसाब से 6 वर्गो में विभाजित किया गया। धैर्य सागर ग्रुप में 10–16 वर्ष के शिवरार्थी गम्भीर सागर ग्रुप में 16–24 वर्ष सुधा सागर ग्रुप में 24–36 वर्ष विद्यासागर ग्रुप में 36–50 वर्ष ज्ञानसागर ग्रुप में 50–60 वर्ष और शांति सागर के ग्रुप में 60 से अधिक के शिविरार्थियों को रखा गया। इस संस्कार शिविर की विशेषताओं को देखकर लगता है कि 2000 लोगों की लगातार सम्पूर्ण व्यवस्थाऐं निरन्तर 11 दिन तक बिना किसी रूकावट के सानन्द सम्पन्न होती रही यह किसी चमत्कार से कम नही है। यह सब परम् पूज्य मुनि पुंगव सुधासागर जी महाराज के चमत्कारिक व्यक्तित्व का कमाल है की दूर–देश से आये हुये सैकड़ो–सैकड़ों लोग एक साथ मिलकर किस तरह धर्म ध्यान करते रहे। शिविर में प्रतिदिन की चर्या में प्रातः 03:50 पर जागोमोहन प्यारे के मधुर स्वरों से प्रारम्भ होता जिसे ब्रह्मचारी विनोद भैया अपने संगीत स्वरों से सजाकर शुभ प्रभात स्त्रोत से सजाते। तदउपरान्त नित्य क्रिया से निवृत हो स्नान कर 05:20 बजे शिवरार्थी ध्यान स्थल पहुँच जाते जहाँ 05:30 बजे परम् पूज्य मुनि पुंगव सुधासागर जी महाराज द्वारा आलौकिक, अकल्पनीय ध्यान कराया जाता था। इस ध्यान को गूंगे के गुड़ की तरह कहा जाये तो ज्यादा अच्छा है जिस व्यक्ति ने गुरूदेव के सानिध्य में एक बार ध्यान कर लिया उसका मनुष्य पर्याय में आना व शिविर करना सार्थक हो गया वह व्यक्ति जीवन में देव शास्त्र गुरू जिनधर्म जिनागम की सार्थकता के साथ ही अपने जीवन की कीमत को समझ सकेगा। ध्यान के बाद 06:30 बजे भगवान जिनेन्द्र देव की संगीत के साथ पूजा व जगत कल्याण की कामना के लिये गुरू मुख से महाशांति धारा का क्रम देखने को मिलता वहीं संगीत के साथ जिनेन्द्र प्रभु के अर्चना विनोद भैया द्वारा व तत्वार्थ सूत्र के 10 अध्यायों के अर्गो का समर्पण क्षुल्लक दोये के द्वारा होता था। 08:30 बजे परम् पूज्य मुनि श्री सुधासागर जी महाराज के 10 धर्म सामाजिक परिवर्तन, व्यसनमुक्त समाज, आम आदमी के जीवन में धर्म का प्रवेश, माता पिता और घर से हो धर्म की शुरूआत जैसे गम्भीर विषयों पर मार्मिक प्रवचन सुनने का अवसर मिलता रहा।

प्रवचन उपरांत आहारचर्या के साथ शिविरार्थियों के आहार घर–घर निमंत्रण पूर्वक जिसमें श्रावक शिविरार्थियों को आदर पूर्वक शुद्ध आहार आदर पूर्वक अपने घर ले जाकर कराते थे। शिविरार्थी भी मौन पूर्वक आहार सम्पन्न कर 12:30 बजे सामायिक पाठ मेरी भावना बारह भावना आदि अनेक पाठों को पूरा करते। 02:00 बजे से मुनि पुंगव के सान्निध्य में शंका समाधान तद्उपरांत 03:00 बजे से स्टोप देश की क्लास गुरूमुख से सुनने का

यदि तुम सदा ही गौरवमय बनना चाहते हो तो सबके प्रति क्षमामय व्यवहार करो (तिरुवल्लूर)

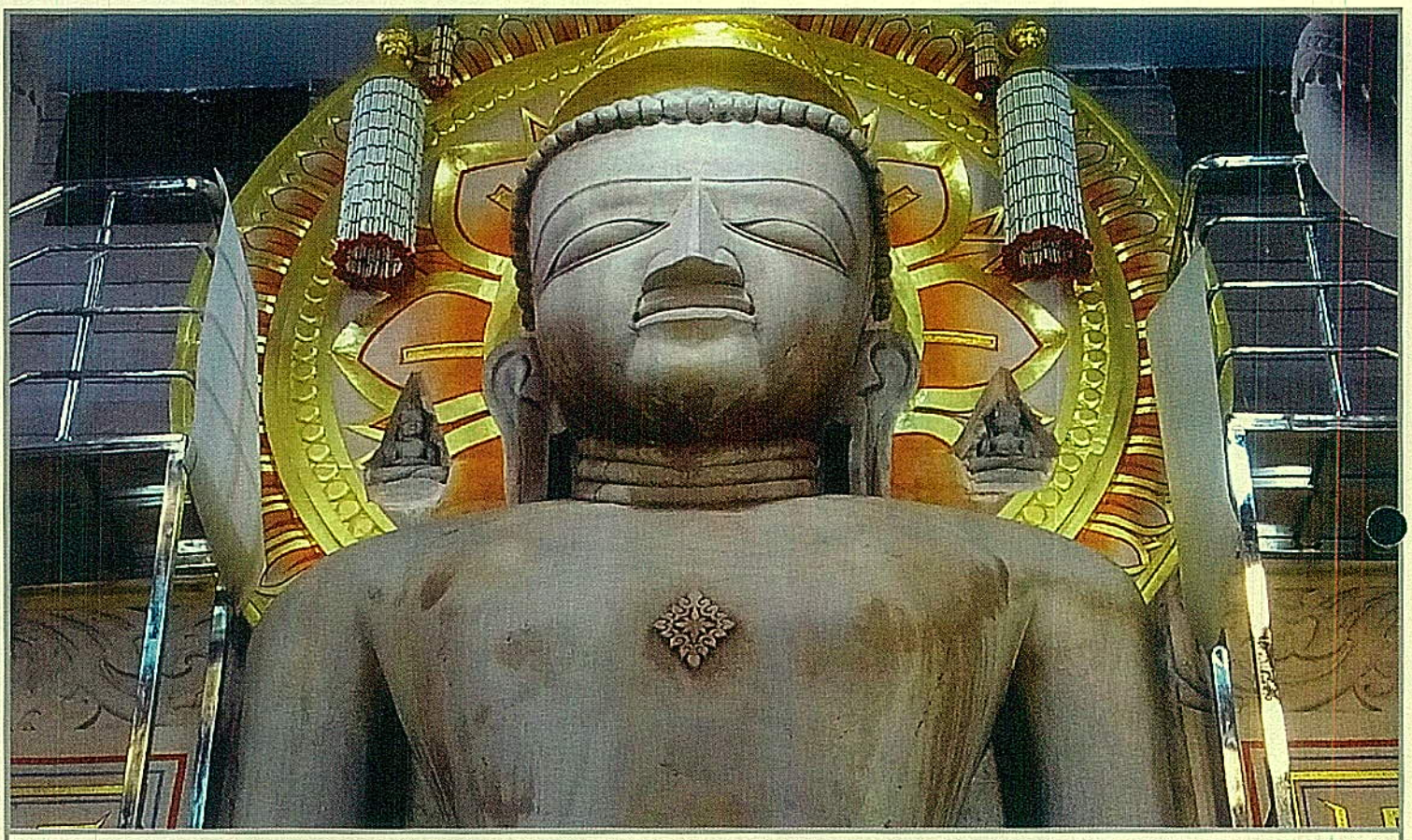

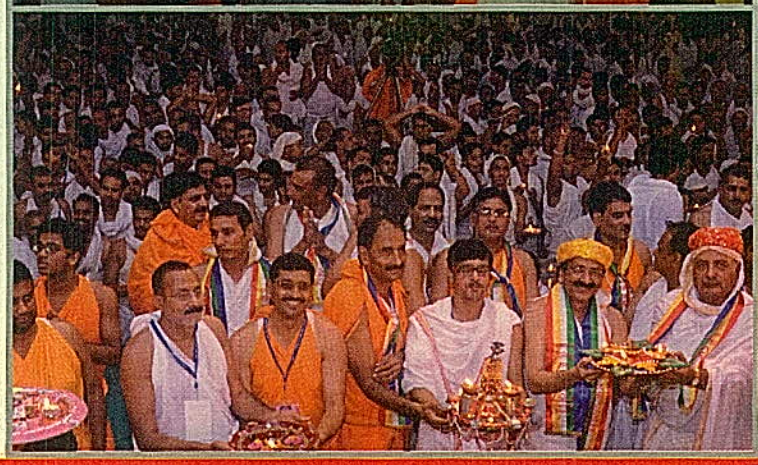

जैन धर्म में तपतीर्थ, ज्ञानतीर्थ, संयमतीर्थ आदि कहे गये हैं

सौभाग्य मिला। 04:30 बजे अल्पाहार ग्रहण कर शिविरार्थी 05:30 बजे प्रतिक्रमण सुकांत भैया के साथ करते व 06:10 बजे से आचार्य भक्ति व आरती का भव्य आयोजन आरती के दौरान विनोद भैया व पंकज भीलबाड़ा के भजनों से सज्जित भव्य आरती सबके मन को आनन्दित करने वाली थी। धूप दशमी के दिवस में 5 हजार दीपों से महा आरती की छटा एकदम निराली थी। सायं 07:00 बजे देश के विभिन्न भागों से आये हुये विद्वान वास्तु विज्ञ श्री दिनेश गंगवाल जयपुर, श्री कुंथू कुमार उदयपुर, श्री पी.सी. पहाड़िया ज्ञानोदय तीर्थ ब्रहचारी विनोद भैया जबलपुर, ब्रह्मचारी शुकांत भैया अजमेर, ब्रहचारी सुनील भैया सूरत, ब्रह्मचारी मोनू भैया जबलपुर ने शिविरार्थियों को विशेष कक्षाओं में अध्ययन कराने का कार्य किया। संस्कार शिविर के दौरान भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री सुधीर सिंघई को परम् पूज्य गुरूदेव के दर्शन करने का सौभाग्य मिला। श्री प्रेमचंद्र प्रेमी कटनी के साथ पर्व की ग्यारस को गुरू चरणों में श्रीफल भेंट करने पहुँचे व शिविरार्थियों के मध्य आरती भक्ति करने का सौभाग्य प्राप्त किया। वहीं प्रातः महापूजा के समय शांतिधारा करने का भी सौभाग्य प्राप्त किया। धर्मसभा के प्रारम्भ में आचार्य श्री के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री सुधीर कुमार सिंघई, श्री प्रेमचंद्र प्रेमी के साथ कमेटी के गौरव अध्यक्ष श्री प्रदीप कुमार जम्बू कुमार गदिया नसीराबाद वाले मध्यप्रदेश महासभा के संयोजक श्री विजय कुमार धुर्रा, श्री विनोद छाबड़ा जयपुर, श्री जम्बू भैंसा व कमेटी के अध्यक्ष श्री रमेश पाटोदी के सहयोग से किया गया।

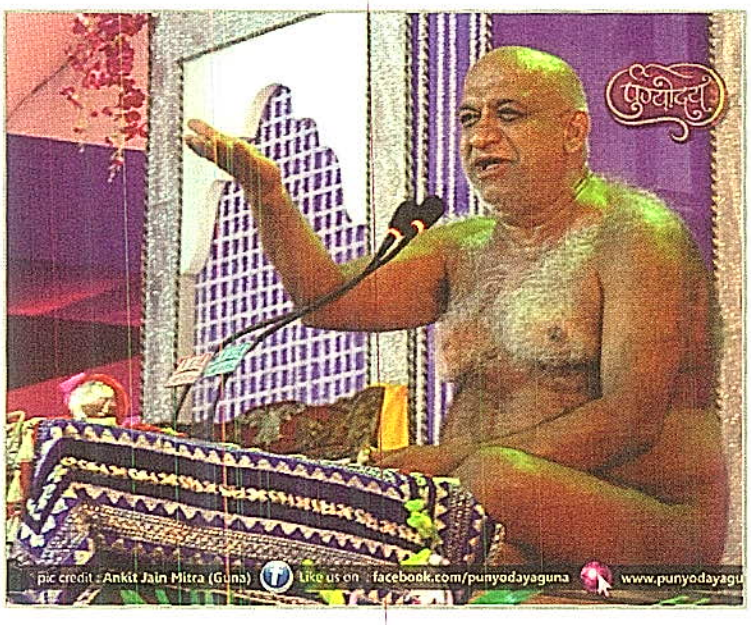

धर्मसभा का संचालन कर रहे मध्यप्रदेश महासभा के संयोजक श्री विजय धुर्रा ने कहा की परम् पूज्य आध्यात्मिक संत तीर्थोधारक मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी महाराज ने सर्व प्रथम बुन्देलखण्ड के ललितपुर नगर में श्रावक संस्कार शिविर के नवीन विचार को जन्म दिया। इसके बाद ही श्रावक संस्कार शिविर की श्रृंखला प्रारम्भ हुई। पूज्य श्री की प्रेरणा से विगत 23 वर्षो से श्रावक संस्कार शिविरों का आयोजन किया जा रहा है जिसमें डॉ., इंजीनियर, आर्किटेक, समाज के श्रेष्ठी व विद्वान जनों के अलावा अनेक विद्याओं में पारंगत व्यक्ति शिविर में सम्मिलित होकर पूज्य गुरूदेव के सान्निध्य में शिष्यवत धर्म ध्यान करते रहे। पूर्व के शिविरों में श्री अशोक पाटनी, आर.के. मार्बल, स्व. ओमप्रकाश बाबूजी सूरत, उदयपुर युनिवर्सिटी के डीन सहित अनेक विशेष लोग शिविरार्थी बनते रहे। आज भी रेलवे के डिप्टी डी. आर.एम. रवी जैन दिल्ली, आर्किटेक श्री अमित जैन इन्दौर, मुम्बई, पुना, सूरत, दिल्ली जैसे महानगरों के श्रावक शिविर में धर्म ध्यान कर रहे हैं। इस शिविर से निकले 15 से 20 शिविरार्थी जैनेश्वरी दीक्षा को प्राप्त कर मोक्ष मार्ग पर आगे बढ़ रहे हैं। यह सब परम् पूज्य मुनि पुंगव सुधासागर महाराज की प्रेरणा और संस्कारों का प्रताप है।

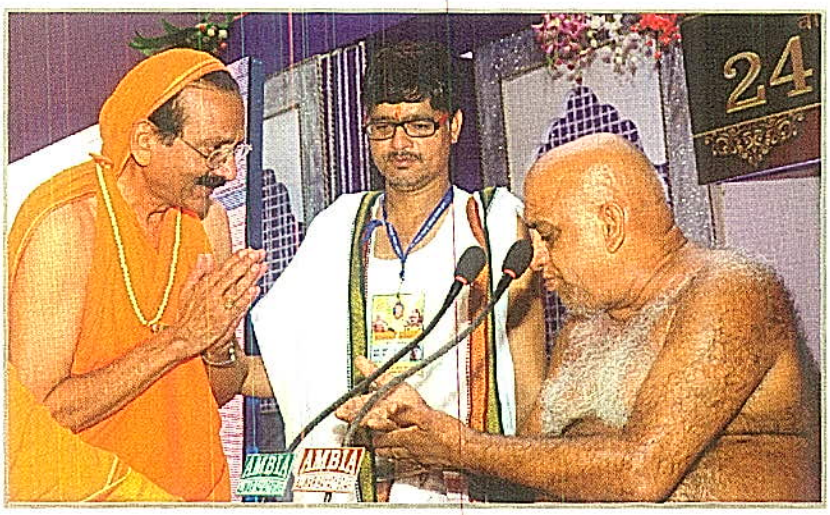

समहारों को सम्बोधित करते हुये भारतवर्षीय दि0 जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर कुमार सिंघई ने कहा कि परम् पूज्य मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी महाराज आचार्य श्री के ऐसे परम प्रभावी धर्म प्रभावना करने वाले शिष्य हैं जिन्होंने

आत्मज्ञान रूप पवित्र तीर्थ है (पद्मनन्दि-पंचविंशतिका, चंद्रोदय अ 28)

जहाँ भी पहुँचे उसी अंचल के तीर्थों का जीर्णोद्धार कराया है और ऐसे चेतन्य तीर्थों को जगाने की साधना इस शिविर में करा रहे हैं। मुनि श्री ने अपनी साधना और तपस्या को तीर्थों के उद्धार के लिये समर्पित कर दिया। महाराज श्री के दर्शन करने के साथ मुझे आज पादप्रक्षालन कर देश के कोने–कोने से आये 2 हजार से अधिक शिविरार्थियों के मध्य गन्दोदक लेने का सौभाग्य मिला। परम पूज्य की मुझ पर भरपूर कृपा रही है। कटनी पंचकल्याणक के दौरान सौधर्म इन्द्र बनने का भी अवसर मिला। मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी महाराज के बारे में क्या कहना वे जो भी कार्य करते हैं वह अदभुत होता है। इतनी बड़ी संख्या में इस भीलवाड़ा नगर में संस्कार शिविर की कल्पना तो गुरू श्री ही कर सकते हैं यह अदभुत नजारा है जो दो दिनों से मुझे देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। ऐसा लगता है सचमुच ही चतुर्थ काल आ गया हो। मुनि श्री ने वह कार्य अपनी प्रेरणा से कराया है जिसे तीर्थ क्षेत्र कमेटी को करना चाहिये। मैंने देवगढ़ तीर्थ की उस अवस्था को देखा है जब हमारी विरासत बिखरी पड़ी थी। उस ओर किसी का ध्यान नहीं था। देवगढ़ तीर्थ को संवारने जीर्णोद्धार कराने व प्रतिमाओं को उच्च आसन आपके द्वारा दिलाया गया। वहीं तीर्थ क्षेत्र थुबोन जी का कायाकल्प, खंदार जी तीर्थ क्षेत्र का जीर्णोद्धार आपकी प्रेरणा से हुआ। गोलाकोट ऐसा तीर्थ क्षेत्र जहाँ से निरन्तर प्रतिमायें चोरी हो रही थी वहाँ मुझे मध्यांचल तीर्थ क्षेत्र कमेटी ने कार्य करते हुये थुबोन जी कमेटी के सर्वश्री अरविन्द जी, विनोद जी, विजय जी, राकेश जी, सुमत जी के साथ दौरा करने का मौका मिला था और अब जब मैंने गुरू श्री के पदार्पण के पश्चात अभी अभी गोलाकोट तीर्थ क्षेत्र को देखा तो देखता ही रह गया। बिल्कुल अदभुत नजारा यह सब मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी महाराज की ऊर्जावान प्रेरणा से ही सम्भव है। ये ऐसे व्यक्तित्व है कि इनका बखान शब्दों से परे है गुरूदेव आपका आशीर्वाद तीर्थ क्षेत्र कमेटी को निरन्तर मिलता रहे और आचार्य भगवन की मार्गदर्शन में हम कार्य करते रहें ऐसी प्रेरणा मिलती रहे। श्री सुधीर सिंघई ने शिविर निर्देशक श्री हुकुम काका कोटा को शाश्वत ट्रस्ट में ट्रस्टी बनाने की घोषणा इस दौरान की। चर्तुमास कमेटी के महामंत्री श्री जयकुमार जैन ने कहा कि हमारा सौभाग्य है कि हमारे नगर में 2 हजार से अधिक शिविरार्थी गुरूदेव की छत्रछाया में धर्म ध्यान कर रहे हैं। कमेटी के गौरव अध्यक्ष श्री प्रदीप गदिया, अध्यक्ष श्री रमेश पाटोदी, महामंत्री श्री जम्बु जैन कोषाध्यक्ष, श्री सुखमाल पाटोदी, श्री एन.के सेठी, श्री प्रवीण चौधरी आदि ने तीर्थ क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री सिंघई व प्रेमी जी, श्री अरविन्द जैन मक्कू व श्री अमित जैन जबलपुर का शॉल, श्रीफल और पीत वस्त्र से सम्मान किया।

इस अवसर पर संस्कार शिविर समारोह को सम्बोधित करते हुये मुनि पुंगव सुधासागर जी महाराज ने कहा कि संस्कारवान समाज ही विकास ही राह पर आगे बढ़कर उन्नति के सोपान को प्राप्त करता है। संस्कार कोई घुट्टी नही है जिसे घोट कर पिला सके। संस्कार तो जीवन में शनैः शनैः उतरने वाली वह क्रिया है जिसे देश की संस्कृति और सभ्यता के रूप में जाना जाता है। मुनि श्री ने कहा कि भारत भूमि जैसी पवित्र माटी में भी जन्मे व्यक्ति आतंक के लिये हथियार उठा रहे हैं ३ निर्दोश लोगों की हत्या करने में उनके हाथ नहीं काँपते। इसका मूल कारण है कि हमने बचपन से ही संस्कार नही दिये हम भी पाश्चात सभ्यता की ओर बहे जा रहे है इस भाव को रोकना होगा। मुनि श्री ने कहा कि संस्कार तो माँ के पेट से ही पढ़ना प्रारम्भ हो जाते हैं। हमें बच्चे के गर्भ में आते ही संस्कारों को देने का कार्य प्रारम्भ कर देना चाहिये यही संस्कार बड़े होकर काम में आते हैं।

मुनि श्री ने कहा की व्यसन मुक्त समाज की परिकल्पना को हमें साकर करना होगा। हम अच्छा जीवन जियें इस हेतु हमारे जीवन में सट आवष्कों का होना आवश्यक है। हमारा जीवन पवित्र और उज्जवल बने इस हेतु संस्कार शिविर जो शिक्षा प्राप्त की है उसे जीवन में गहराई से उतारना है। शिविर के समापन समारोह के अवसर पर शिविर पुण्यार्जक श्री अनिल कुमार मनोज कुमार अजमेरा भीलवाड़ा, शिविर निर्देशक श्री भीकमचन्द्र पाटनी अजमेर, शिविर निर्देशक श्री हुकुम काका कोटा, शिविर निर्देशक श्री दिनेश गंगवाल सभी शिक्षाविदों के साथ मध्यप्रदेश श्रावक संघ के संघपति श्री विजय धुर्रा अशोकनगर का सम्मान शॉल, श्रीफल के साथ शिविर संयोजक सर्वश्री नरेश गोधा, सुभाष जैन, अजय बाकलीवाल, नरेश गंगवाल, सुशील शाह, दिलीप गंगवाल, उमराव जी गदिया द्वारा किया गया, वहीं 10 उपवासकर्ता 100 शिविरार्थियों व बाहर से आये हुये वालेन्टीयर्स के साथ शिविर टॉपर रहे शिविरार्थियों का सम्मान भी किया गया।

प्रस्तुति : मोनू भैंसा व पंकज जैन भीलवाड़ा महेन्द्र सेठी भीलवाड़ा

दान, पूजा, तीर्थाटन आदि यदि सम्यग्यान से सुशोभित है तो वे मुक्ति के कारण हैं (उत्तर पुराण)

महाराष्ट्र अंचल द्वारा विभिन्न तीर्थक्षेत्रों का दौरा

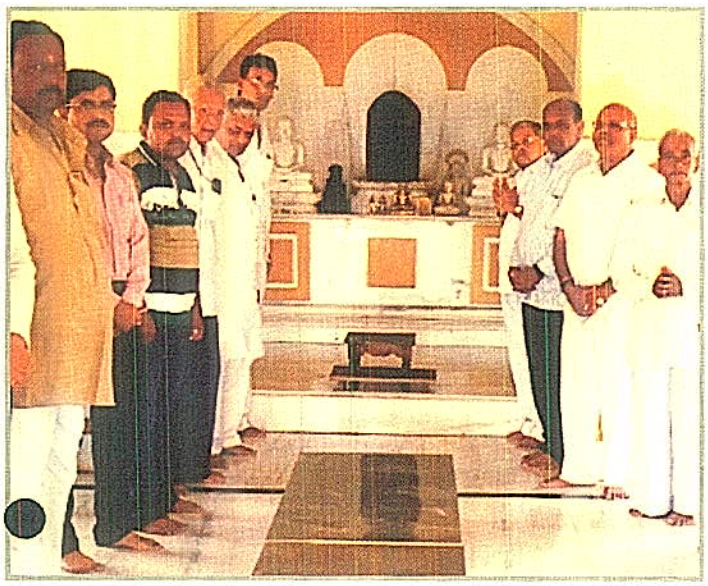

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल द्वारा महाराष्ट्र के तीर्थक्षेत्रों का अवलोकन अंचल पदाधिकारियों द्वारा 6 जुलाई, 2015 के सुबह अतिशय क्षेत्र पंचालेश्वर पर पहुंचने पर क्षेत्र दर्शन तथा क्षेत्र परिसर का अवलोकन किया गया। यह क्षेत्र बहुत प्राचीन है। तीर्थक्षेत्र कमेटी से अभी सम्बद्ध होने से पंचालेश्वर क्षेत्र के पदाधिकारियों को सम्बद्धता प्रमाण पत्र दिया गया। क्षेत्र पर चल रहे कार्य का निरीक्षण क्षेत्र अध्यक्ष श्रीपाल गंगवाल, उपाध्यक्ष डॉ. सुगनचन्द कासलीवाल, महामंत्री भाऊसाहेब बाकलीवाल, कोषाध्यक्ष गौतमचंद काला, विश्वत कैलास खोबरे, सुनील पाटणी, अशोक कासलीवाल, पंडित धन्यकुमार जी ने करवाया। अंचल द्वारा चल रहे कार्य की जानकारी भी इस समय दी गई। यहां से अतिशय क्षेत्र केसापुरी की ओर अंचल पदाधिकारी रवाना हुए। केसापुरी पहुंचने पर क्षेत्र का महत्व एवं मूलनायक भगवान कल्पतरु पार्श्वनाथजी का अतिशय, क्षेत्र के विश्वस्त चंद्रकांत दिगम्बर जगजीवन तथा पंडित विश्वस खुळे ने बताया। क्षेत्र दर्शन एवं अवलोकन कर यहां से अतिश क्षेत्र भगवान विमलनाथ जी के अंबेजोगाई (बीड़) क्षेत्र पर पदाधिकारी पहुंच कर दर्शन कर अवलोकन किया। क्षेत्र की जानकारी अध्यक्ष बाळासाहेब मांडवकर, उपाध्यक्ष अनिल जैन, महामंत्री शैलेन्द्र कंगळे आदि कार्यकर्ताओं ने दी। क्षेत्र का महत्व सुनकर सभी चकित हुए। शाम के भोजन उपरांत लातूर की ओर प्रस्थान हुआ। लातूर में श्री फूलचंद जैन रवि मसाले के मामाजी के यहां रात्रि विश्राम कर दिनांक 7 जुलाई, 2015 को सुबह किल्लारी मंदिर के दर्शन कर नाईचाकूर अतिशय क्षेत्र पर पहुंचे। प्रथम जूना नाईचाकूर गांव के मंदिर का अवलोकन किया। लातूर भूकंप के समय यह गांव क्षतिग्रस्त हो गया था। यहां के सभी लोगों को शासन ने नई जगह देकर ग्राम बसाया। इस नये गांव नाईचाकूर में पुराने गांव के अतिशय कारक प्रतिमाओं को प्रतिस्थापित किया। अतिशय क्षेत्र नाईचाकूर की जानकारी अध्यक्ष श्री फूलचंद इंगलवार, जमालपुरे आदि ने दी। यहां का जीर्णोद्धार कार्य प्रशंसनीय है। नाईचाकूर क्षेत्र पर ही जैन समाज के वयोवृद्ध प्रतिष्ठित कार्यकर्त श्री मतीसागर पाटील भी स्वास्थ ठीक नहीं होने पर भी उपस्थित थे। उन्होंने सभी क्षेत्रों के बारे में चर्चा की। पश्चात उन्होंने अंचल पदाधिकारियों को रामलिंग मूदगड क्षेत्र पर ले गये। क्षेत्र का अवलोकन कराया एवं क्षेत्र को सम्बद्धता देने की विनती की।

रास्ते में उमरगा के पास जेकेकूर ग्राम में निकली प्रतिमाओं के दर्शन कर अवलोकन किया। दोपहर का भोजन नाईचाकूर में लेने के उपरांत सभी पदाधिकारी अतिशय क्षेत्र आष्टाकासार पहुंचकर दर्शन कर क्षेत्र अवलोकन किया। क्षेत्र का अतिशय अध्यक्ष श्री बाबूराव भस्मे तथा प्रबंधक श्री भारत पाटील ने बताया। यहां से आगे सोलापुर के पास के चंद्रप्रभु दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र कुमटा पहुंचे। वहां पर अंचल पदाधिकारियों का बड़े जोश के साथ स्वागत किया गया। क्षेत्र की जानकारी शाम पाटील आदि ने दी तथा क्षेत्र अवलोकन कराया। कुमटा क्षेत्र पर सभा सम्पन्न हुई। इस सभा में कुमटा ग्राम के श्रावक श्राविका, नळदुर्ग एवं तुलजापुर मंदिर के पदाधिकारी भारी संख्या में उपस्थित थे। तत्पश्चात अंचल के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अनिल जमगे, सोलापुर के घर शाम का भोजन हुआ। इस पूरे दो दिन की क्षेत्र अवलोकन की यात्रा में अंचल अध्यक्ष श्री प्रमोद कुमार कासलीवाल, महामंत्री श्री देवेन्द्र कुमार काला, कोषाध्यक्ष श्री मनोज साहूजी, संरक्षक श्री सुरेश कासलीवाल, कार्यकारी सदस्य श्री केतन ठोले एवं नाईचाकूर क्षेत्र के अध्यक्ष तथा दक्षिण भारत जैन सभा के मराठवाड़ा विभाग अध्यक्ष श्री फूलचंद इंगलवार जैन रवि मसाले साथ थे।

- देवेन्द्र कुमार काला
महामंत्री- तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल

विश्व प्रसिद्ध संगीत सम्राट पद्मश्री से विभूषित श्री रविन्द्र जैन नहीं रहे

संगीत व गीतकार की दुनिया में अपने मधुर एवं बुलंद आवाज में मौलिक रचनाएं कर देश-विदेश में कीर्ति अर्जित करने वाले श्री रविन्द्र जैन जिनकी एक झलक पाने के लिए लाखों लोग तरसते थे, ऐसे महारथी का दुःखद निधन दिनांक 9 अक्टूबर, 2015 को मुंबई में हो गया। उनके आकस्मिक निधन का समाचार सुनकर पूरा देश स्तब्ध रह गया। चक्षु विहीन श्री रविन्द्र जैन के ज्ञान चक्षु के आगे अच्छे-अच्छे चक्षु वाले नतमस्तक हो जाया करते थे। आन-बान और शान की जिंदगी जीने वाले श्री जैन के देहावसान से न केवल जैन समाज की अपितु पूरे देश ने अपना अनमोल रत्न सदा-सदा के लिए खो दिया है।

घुँघरू की तरह सदैव गुनगुनाने वाले श्री रविन्द्र जैन हिन्दी सिनेमा जगत के महान संगीतकार के रूप में अपनी अमिट पहचान बनाई है। आज भले ही हम सभी के बीच नहीं हैं परन्तु उन्होंने संगीत के माध्यम से जो रचनाएं की हैं देश युगों-युगों तक उनका स्मरण करता रहेगा।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर कुमार जैन, महामंत्री श्री पंकज जैन (पारस चैनल) ने श्री रविन्द्र जैन के निधन पर गहरा दुःख प्रकट किया है तथा उनके परिवारजनों के प्रति शोक संवेदना व्यक्त करते हुए दिवंगत आत्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की है।

श्री अजितकुमार ठोले का दुःखद निधन

औरंगाबाद । भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र तथा महाराष्ट्र अंचल के अध्यक्ष श्री प्रमोदकुमार कासलीवाल के जीजा जी श्री 24 सितम्बर, 2015 की शाम को हृदय गति रुक जाने से दुःखद निधन हो साहित्यिक थे । आपने अपने पीछे तीन भाई, पत्नी, दो सुपुत्र एवं भरा-पुरा अंचल के कर्मठ युवा कार्यकर्ता श्री केतन ठोले के पिताश्री अजित कुमार शामलाल ठोले, कोपरगांव वालों का दिनांक गया। उनकी उम्र 60 वर्ष की थी। आप इंजीनियर एवं एक परिवार छोड़ा है।

श्री अनिल कुमार जैन उर्फ लल्लन भैया, कटनी का दुःखद निधन

कटनी। दिगम्बर जैन पंचायत महासभा के मंत्री, थोक कपड़ा कमेटी के संरक्षक, समाजसेवी, मुनिभक्त श्री अनिल कुमार जैन उर्फ लल्लन भैया का आकस्मिक निधन मंगलवार दिनांक 13 अक्टूबर, 2015 की रात्रि को हो गया। उनके निधन का समाचार सुनते ही पूरे जैन समाज कटनी में शोक की लहर दौड़ गई।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष स.सिं.श्री सुधीर कुमार जैन ने भी श्री लल्लन भैया के निधन को समाज की अपूरणीय क्षति बताया । दिगम्बर जैन पंचायत महासभा के अध्यक्ष सिं. श्री संतोष कुमार मालगुजार ने कहा कि श्री लल्लन भैया की कमी समाज को सदैव खलेगी।

वयोवृद्ध श्री चाँदमल जैन, बुरहानपुर का दुःखद निधन

अनुकरणीय व्यक्तित्व के धनी श्री चाँदमल जैन, जैन समाज के वरिष्ट सदस्य सदस्य होने के साथ-साथ धर्म एवं समाज में सदैव अग्रणी रहे। आपने श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र गिरनारजी की प्रबंध समिति, श्री बंडीलाल दिगम्बर जैन कारखाना के संयुक्त मंत्री के पद को सुशोभित किया। पार्श्व ज्योति मंच के आप संरक्षक एवं 6 वर्ष तक आप अध्यक्ष रहे। आपके गौरवर्ण के अनुरूप आपका कार्य था। आपका सद्व्यवहार हम सभी के लिए प्रेरणादायी रहेगा। आप अनेकों संस्थाओं के उन्नयन एवं संरक्षण में अटूट श्रद्धा एवं विश्वास रखते थे तथा प्रायः यह कहते थे कि कोई भी अच्छी संस्था बने तो वह 100 वर्ष तक चलती ही है। इसमें दिया गया दान आपका 100 वर्ष तक सुरक्षित रहता है। वे स्वयं भी दान देते थे और यह संस्कार अपनी संतानों को भी दिये थे।

नब्बे वर्ष की आयु में दिनांक 20/8/2015 को हुए देहावसान पर उनके लघु सुपुत्र श्री राजेश जैन, पुत्रवधू श्रीमती शोभा जैन ने परोपकार वृत्ति का परिचय देते हुए प्रति वर्ष विद्यार्थियों, रोगियों आदि के लिए आर्थिक सहायता प्रदानकरने के उद्देश्य से श्रीमती मालादेवी चांदमल जैन पारमार्थिक संस्थान बनाने की घोषणा की है। सिद्धक्षेत्रों एवं अतिशय क्षेत्रों तथा मंदिरों के लिए दान की घोषणाएं की हैं।

- डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन 'भारती', बुरहानपुर

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार की ओर से उपरोक्त दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवार को यह दुःख सहन करने की शक्ति मिले, ऐसी वीर प्रभु से प्रार्थना करता है।

क्रोध रूपी अग्नि, पुण्य रूपी रत्नों को जला देती है।

शाश्वत भूमि में शाश्वत ट्रस्ट द्वारा शाश्वत कार्य करने का संकल्प

राष्ट्रसंत परमपूज्य आचार्यश्री विद्यासागरजी मुनिराज का आशीर्वाद

श्री बीना-बारहा क्षेत्र (सागर) म.प्र. में वर्ष 2015-2018 के लिए नये ट्रस्ट मण्डल के गठन एवं पदाधिकारियों के चयन हेतु आहुत की गई शाश्वत ट्रस्ट मण्डल की बैठक में नवगठित ट्रस्टियों / पदाधिकारियों ने राष्ट्रसंत परमपूज्य आचार्यश्री विद्यासागर जी मुनिराज का आशीर्वाद ग्रहण कर शाश्वत कार्य करने का संकल्प प्रकट किया।

1. स.सिं. श्री सुधीर कुमार जैन	कटनी	अध्यक्ष	09425153722
2. श्री महेन्द्र कुमार जैन	चेन्नई	उपाध्यक्ष	09841029845
3. श्री प्रभातचन्द्र सवाईलाल जैन	मुंबई	उपाध्यक्ष	09820076501
4. श्री प्रदीप जैन (पीएनसी)	आगरा	उपाध्यक्ष	09837056653
5. श्री राजाभाई शाह	सूरत	उपाध्यक्ष	09825119108
6. श्री संतोष कुमार जैन 'पेंढारी'	नागपुर	उपाध्यक्ष	09822225911
7. श्री छीतरमल जैन पाटनी	हजारीबाग	महामंत्री	09431140416
8. श्री खुशालचन्द जैन 'सी.ए.'	मुंबई	कोषाध्यक्ष	09819011828
9. श्री अजय कुमार जैन	आरा	ट्रस्टी(अध्यक्ष-बी.कोठी)	09334396920
10. श्री कैलाशचन्द बड़जात्या	कोलकाता	ट्रस्टी(अध्यक्ष-ते.कोठी)	09831020913
11. श्री अशोक पाटनी (आर.के.मार्बल)	मदनगंज-किशनगढ़	ट्रस्टी	09829097066
12. श्री देवेन्द्र जैन (आईनोक्स)	दिल्ली	ट्रस्टी	011-23323293
13. श्रीमती सरिता एम. जैन	चेन्नई	ट्रस्टी	09841018370
14. श्री वसंतलाल एम. दोशी	मुंबई	ट्रस्टी	09820248383
15. श्री एम. पी. अजमेरा (रिटायर्ड आई.ए.एस.)	रांची	ट्रस्टी	09431101621
16. श्री विनोद कुमार जैन (बाकलीवाल)	मैसूर	ट्रस्टी	09900420001
17. श्री विनोद काला	कोलकाता	ट्रस्टी	09831077074
18. श्री अनिल जैन	दुर्गापुरा	ट्रस्टी	09434749624
19. श्री श्रीकिशोर जैन	दिल्ली	ट्रस्टी	09910690823
20. श्री मदनलाल जैन	दिल्ली	ट्रस्टी	09899094674
21. श्री पदमकुमार जैन	करनाल	ट्रस्टी	09467728124
22. श्री पंकज जैन (पारस चैनल)	दिल्ली	ट्रस्टी	09810161654
23. श्री जम्बूप्रसाद जैन	गाजियाबाद	ट्रस्टी	09312965146
24. डॉ. सुहास शहा	मुंबई	ट्रस्टी	09821043913
25. श्री हुकम काका जैन	कोटा	ट्रस्टी	09414184618
26.श्री राजेश जैन 'सी.ए.'	दिल्ली	ट्रस्टी	09650388888
27. श्री प्रकाशचन्द सेठी	रांची	ट्रस्टी	09334385028
28. श्री प्रेमचंद जैन 'प्रेमी'	कटनी	ट्रस्टी	09425174433
29. श्री राजेन्द्र प्रसाद जैन	चेन्नई	ट्रस्टी	09841055783
30. श्री राकेश कुमार सेठी 'सी.ए.'	कोलकाता	ट्रस्टी	09830255464
31. श्री संजय जैन 'मैक्स'	इंदौर	ट्रस्टी	09425053521
32. श्री विक्रम काला	रांची	ट्रस्टी	09431115133
33. श्री विमल कुमार जैन सोगानी	इंदौर	ट्रस्टी	09826027577
34. अध्यक्ष-भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुंबई पदेन ट्रस्टी			
35. महामंत्री-भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुंबई		पदेन ट्रस्टी	

उपरोक्त गठित बोर्ड द्वारा निम्नलिखित 3 मंत्रियों को मनोनीत किया गया, जिनका न्यासी होना अनिवार्य नहीं है -

1. श्री अमित पडरिया	जबलपुर	मंत्री	08989890989
2. श्री प्रभात कुमार सेठी	गिरिडीह	मंत्री	09431167498
3. श्री सुनील अजमेरा	हजारीबाग	मंत्री	09431140177

असंतोषी से बड़ा कोई गरीब नहीं, संतोषी से बढ़कर कोई धनवान नहीं।

विद्वत्परिषद् कार्यकारिणी में अनेक निर्णय

सागर (म.प्र.) स्थित श्री गणेश वर्णी दिगम्बर जैन संस्कृत महाविद्यालय में दिनांक 2 अक्टूबर को डॉ. जयकुमार जैन, मुजफ्फरनगर की अध्यक्षता में श्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् (रजि.)–कार्यकारणी समिति का उपवेशन प्रो. फूलचन्द जैन 'प्रेमी' के द्वारा मंगलाचरण से सम्पन्न हुआ। उपवेशन में डॉ. फूलचन्द जैन 'प्रेमी', डॉ. शीतलचन्द जैन, डॉ. नेमिचन्द्र जैन, पं. अभयकुमार जैन, डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन 'भारती', डॉ. नरेन्द्रकुमार जैन, डॉ. अजित जैन, डॉ. आशीष जैन, पं. मुकेशकुमार जैन, पं. सुरेन्द्रकुमार जैन, इन्दौर आदि सदस्यों ने भाग लिया। इस उपवेशन में सर्वसम्मति से निम्नलिखित निर्णय लिये गये–

1. वर्तमान कार्यकारिणी का कार्यकाल आगामी 6 माह के लिए बढ़ाया जाए।

2. वर्तमान सभी सदस्यों से उनका बायो–डाटा मंगवाया जाए ताकि सदस्यता के अनुरूप वांछित जानकारी कार्यालय को प्राप्त हो सके। सभी सदस्य बायो–डाटा के साथ 500/– का अंश दान अनिवार्य रूप से विद्वत्परिषद् के लिए करेंगे।

3. पं. पन्नालाल जैन साहित्याचार्य स्मृति विद्वत्परिषद् पुरस्कार–2015, पं. ज्ञानचन्द जैन व्याकरणाचार्य–प्राचार्य श्री गणेशवर्णी दिगम्बर जैन संस्कृत महाविद्यालय, सागर को प्रदान किया जाए।

4. क्षु. गणेशप्रसाद वर्णी स्मृति विद्वत्परिषद् पुरस्कार–2015 से ब्र. अतुल भैया, बरनावा तथा डॉ. सुमत जैन, जयपुर को प्रदान किया जाए।

5. पं. गोपालदास वरैया स्मृति विद्वत्परिषद् पुरस्कार–2015 से श्री एम.पी.राजेन्द्रकुमार, श्रवणबेलगोला तथा पं. विनोदकुमार जैन, प्रतिष्ठाचार्य, रजवांस को प्रदान किया जाए।

6. परमात्म प्रकाश ग्रन्थ का अनुवाद एवं डॉ. ए.एन.उपाध्ये की अंग्रेजी प्रस्तावना का हिन्दी अनुवाद कराकर यथाशीघ्र प्रकाशित किया जाए।

7. विद्वत्परिषद् के विद्वान् सदस्य विद्वत्परिषद् की रीति–नीति के अनुरूप लेखन, विधि–विधान, प्रतिष्ठाकार्य एवं प्रवचन करें।

8. वर्तमान में जो प्रकाशन हो रहे हैं उन्हें प्रकाशन से पूर्व विशेषज्ञ विद्वानों से निरीक्षित करवाकर ही प्रकाशित किया जाए; ऐसा सन्तों एवं विद्वानों से निवेदन है।

उक्त सभी निर्णयों के परिप्रेक्ष्य में विद्वान् अपनी सहभागिता से विद्वत्परिषद् को मजबूत बनाएं।

डॉ./ पं. पन्नालाल जैन साहित्याचार्य स्मृति विद्वत्परिषद् पुरस्कार समर्पण

दिनांक 4 अक्टूबर,2015 को परम पूज्य वात्सल्य वारिधि, जैनधर्म संस्कृति एवं ज्ञान–विज्ञान के पुरस्कर्त्ता उपाध्याय श्री निर्भयसागर जी महाराज,पूज्य मुनिश्री शिवदत्तसागर जी महाराज, क्षुल्लक श्री ध्यानभूषण जी महाराज, क्षुल्लक श्री सूर्यदत्तसागर जी महाराज, क्षुल्लक श्री चन्द्रदत्तसागर जी महाराज के सान्निध्य एवं विद्वत्परिषद् के अध्यक्ष डॉ. जयकुमार जैन की अध्यक्षता में डॉ. पं. पन्नालाल जैन साहित्याचार्य स्मारक समिति, सागर (म.प्र.) की ओर से श्री पवन जैन, भरुच की ओर से देय पं. पन्नालाल जैन साहित्याचार्य स्मृति विद्वत्परिषद् पुरस्कार–2015, पं. ज्ञानचन्द जैन व्याकरणाचार्य–प्राचार्य श्री गणेशवर्णी दिगम्बर जैन संस्कृत महाविद्यालय, सागर को प्रशस्ति पत्र, राशि 11000/–रु., शाल, श्रीफल, मोतीमाल आदि प्रदान कर पंडित जी के सुपुत्रों–श्री महेश जैन, श्री अशोक जैन, डॉ. राजेश जैन, सागर तथा विद्वत्परिषद् के वरिष्ठ विद्वानों द्वारा प्रदान किया गया। पं. पन्नालाल जैन साहित्याचार्य का परिचय डॉ. नेमिचन्द्र जैन (उपाध्यक्ष), खुरई ने तथा पं. ज्ञानचन्द जैन का परिचय डॉ. शीतलचन्द जैन, जयपुर ने दिया। प्रशस्ति पत्र का वाचन डॉ. अशोककुमार जैन, वाराणसी ने किया। सफल संचालन डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन 'भारती' (महामन्त्री) ने किया। इस अवसर पर पुरस्कार पुण्यार्जकों एवं पुरस्कृत पंडित जी का अर्धशतकाधिक विद्वत्परिषद्–विद्वानों, श्रेष्ठियों तथा महाविद्यालय परिवार ने मोतीमाल से किया। पुरस्कार का यह गरिमामय आयोजन सागर नगर की शान बढ़ाने वाला सिद्ध हुआ। प्रो. क्रान्तकुमार जैन सर्राफ ने आभार व्यक्त किया। शुभाशीर्वाद उपाध्याय श्री निर्भयसागर जी महाराज ने प्रदान किया।

डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन 'भारती'
महामन्त्री–श्री अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद्
एल 65, न्यू इन्दिरानगर, बुरहानपुर (म.प्र.)

मंगलमय पाँचों कल्याणक, मंगल जिनशासन उद्देश मंगलमय निर्वाणभूमि, मंगलमय अतिशय क्षेत्र विशेष ।। (पं. राजमल पवैया)

दीये बाहर में ही नहीं, भीतर में भी जले

हम हर वर्श दीपावली मनाते हैं। हर घर, हर आंगन, हर बस्ती, हर गाँव में सबकुछ रोशनी से जगमगा जाया करता है। आदमी मिट्टी के दीए में स्नेह की बाती और परोपकार का तेल डालकर उसे जलाते हुए भारतीय संस्कृति को गौरव और सम्मान देता है, क्योंकि दीया भले मिट्टी का हो मगर वह हमारे जीने का आदर्श है, हमारे जीवन की दिशा है, संस्कारों की सीख है, संकल्प की प्रेरणा है और लक्ष्य तक पहुँचने का माध्यम है। दीपावली मनाने की सार्थकता तभी है जब भीतर का अंधकार दूर हो। रोशनी से केवल बाहरी परिवेश को प्रकाशमय नहीं बनाये, बल्कि भीतर में भी जगमगाहट पैदा करें, भीतरी परिवेश को भी प्रकाशमय बनाये।

रोशनी! उत्सव का प्रतीक, खुशी के इज़हार करने का प्रतीक है, सफलता का प्रतीत है, अंधकारमुक्ति का प्रतीक है। अगर हम इस सोच को गहराई में डुबो लें तो ये सूक्तियां हमारे जीवन की रक्त धमनियां बन सकती हैं और उससे उत्तम व्यवहार की रश्मियां प्रस्फुटित हो सकती है। उन रश्मियों की निश्पत्तियां के स्वर होंगे– "सदा दीपावली संत की आठों पहर आनन्द", "घट–घट दीप जले", "दीये की लौ सूरज से मिल जाये"। ऐसा होने से हमारा जीवन सफल भी होगा, सार्थक भी होगा और रोशनीमय भी होगा।

भगवान महावीर ने दीपावली की रात जो उपदेश दिया उसे हम प्रकाश पर्व का श्रेश्ठ संदेश मान सकते हैं। भगवान महावीर की यह शिक्षा मानव मात्र के आंतरिक जगत को आलोकित करने वाली है। तथागत बुद्ध की अमृत वाणी 'अप्पदीवो भव' अर्थात 'आत्मा के लिए दीपक बन' वह भी इसी भावना को पुष्ट कर रही है। इतिहासकार कहते हैं कि जिस दिन ज्ञान की ज्योति लेकर नचिकेता यमलोक से मृत्युलोक में अवतरित हुए वह दिन भी दीपावली का ही दिन था।

यद्यपि लोक मानस में दीपावली एक सांस्कृतिक पर्व के रूप में अपनी व्यापकता सिद्ध कर चुका है। फिर भी यह तो मानना ही होगा कि जिन ऐतिहासिक महापुरुषों के घटना प्रसंगों से इस पर्व की महत्ता जुड़ी है, वे अध्यात्म जगत के शिखर पुष थे। इस दृष्टि से दीपावली पर्व लौकिकता के साथ–साथ आध्यात्मिकता का अनूठा पर्व है।

यह बात सच है कि मनुष्य का रूझान हमेशा प्रकाश की ओर रहा है। अंधकार को उसने कभी न चाहा न कभी माँगा। 'तमसो मा ज्योतिगर्मय' भक्त की अंतर भावना अथवा प्रार्थना का यह स्वर भी इसका पुष्ट प्रमाण है। अंधकार से प्रकाश की ओर ले चल इस प्रशस्त कामना की पूर्णता हेतु मनुष्य ने खोज शुरू की। उसने सोचा कि वह कौन–सा दीप है जो मंजिल तक जाने वाले पथ को आलोकित कर सकता है। अंधकार से घिरा हुआ आदमी दिशाहीन होकर चाहे जितनी गति करें, सार्थक नहीं हुआ करती। आचरण से पहले ज्ञान को, चारित्र पालन से पूर्व सम्यक्त्व को आवश्यक माना है। ज्ञान जीवन में प्रकाश करने वाला होता है। शास्त्र में भी कहा गया–'नाणं पयासयरं' अर्थात ज्ञान प्रकाशकर है।

हमारे भीतर अज्ञान का तमस छाया हुआ है। वह ज्ञान के प्रकाश से ही मिट सकता है। ज्ञान दुनिया का सबसे बड़ा प्रकाश दीप है। जब ज्ञान का दीप जलता है तब भीतर और बाहर दोनों आलोकित हो जाते हैं। अंधकार का साम्राज्य स्वतः समाप्त हो जाता है। ज्ञान के प्रकाश की आवश्यकता केवल भीतर के अंधकार मोह–मूर्च्छा को मिटाने के लिए ही नहीं, अपितु लोभ और आसक्ति के परिणामस्वरूप खड़ी हुई पर्यावरण प्रदूशण और अनैतिकता जैसी बाहरी समस्याओं को सुलझाने के लिए भी जरूरी है।

आतंकवाद, भय, हिंसा, प्रदूषण, भ्रष्टाचार, अनैतिकता, ओजोन का नष्ट होना आदि समस्याएँ इक्कीसवीं सदी के मनुश्य के सामने चुनौती बनकर खड़ी है। आखिर इन समस्याओं का जनक भी मनुष्य ही तो है। क्योंकि किसी पशु अथवा जानवर के लिए ऐसा करना संभव नहीं है। अनावश्यक हिंसा का जघन्य कृत्य भी मनुष्य के सिवाय दूसरा कौन कर सकता है? आतंकवाद की समस्या का हल तब तक नहीं हो सकता जब तक मनुष्य अनावश्यक हिंसा को छोड़ने का प्रण नहीं करता।

मोह का अंधकार भगाने के लिए धर्म का दीप जलाना होगा। जहाँ धर्म का सूर्य उदित हो गया, वहाँ का अंधकार टिक नहीं सकता। एक बार अंधकार ने ब्रह्माजी से शिकायत की कि सूरज मेरा पीछा करता है। वह मुझे मिटा देना चाहता है। ब्रह्माजी ने इस बारे में सूरज को बोला तो सूरज ने कहा–मैं अंधकार को जानता तक नहीं, मिटाने की बात तो दूर, आप पहले उसे मेरे सामने उपस्थित करें। मैं उसकी शक्ल–सूरत देखना चाहता हूँ।

ब्रह्माजी ने उसे सूरज के सामने आने के लिए कहा तो अंधकार बोला–मैं उसके पास कैसे आ सकता हूँ? अगर आ गया तो मेरा अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा।

हालाँकि दीपावली एक लौकिक पर्व है। फिर भी यह केवल बाहरी अंधकार को ही नहीं, बल्कि भीतरी अंधकार को मिटाने का पर्व भी बने। हम भीतर में धर्म का दीप जलाकर मोह और मूर्च्छा के अंधकार को दूर कर सकते हैं। दीपावली के मौके पर सभी आमतौर से अपने घरों की साफ–सफाई, साज–सज्जा और उसे संवारने–निखारने का प्रयास करते हैं। उसी प्रकार अगर भीतर चेतना के आँगन पर जमे कर्म के कचरे को बुहारकर साफ किया जाए, उसे संयम से सजाने–संवारने का प्रयास किया जाए और उसमें आत्मा रूपी दीपक की अखंड ज्योति को प्रज्वलित कर दिया जाए तो मनुष्य शाश्वत सुख, शांति एवं आनंद को प्राप्त हो सकता है। महान दार्शनिक संत आचार्य श्री महाप्रज्ञ लिखते हैं–हमें यदि धर्म को, अंदर को प्रकाश को समझना है और वास्तव में धर्म करना है तो सबसे पहले इंद्रियों को बंद करना सीखना होगा। आँखें बंद, कान बंद और मुँह बंद–ये सब बंद हो जाएँगे तो फिर नाटक या टी0वी0 देखने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी। नाटक देखने की जरूरत उन्हें पड़ती है, जो अंतर्दर्शन में नहीं जाते। यदि आप केवल आधा घंटा के लिए सारी इंद्रियों को विश्राम देकर बिलकुल स्थिर और एकाग्र होकर अपने भीतर झाँकना षुरू कर दें और इसका नियमित अभ्यास करें तो एक दिन आपको कोई ऐसी झलक मिल जाएगी कि आप रोमांचित हो जाएँगे। आप देखेंगे–भीतर का जगत कितना विशाल है, कितना आनंदमय और प्रकाशमय है। वहाँ कोई अंधकार नहीं है, कोई समस्या नहीं है। आपको एक दिव्य प्रकाश मिलेगा।

इस पर्व के साथ जुड़े मर्यादा पुरुषोत्तम राम, भगवान महावीर और दयानंद सरस्वती आदि महापुरुषों की आज्ञा का पालन करके ही दीपावली पर्व का वास्तविक लाभ और लुफ्त उठा सकते हैं। संसार का प्रत्येक मनुष्य उनके अखंड ज्योति प्रकट करने वाले संदेश को अपने भीतर स्थापित करने का प्रयास करें, तो संपूर्ण विश्व में शांति और मैत्री की स्थापना करने में कोई कठिनाई नहीं हो सकती है तथा सर्वत्र खुशहाली देखी जा सकती है और वैयक्तिक जीवन को प्रसन्नता और आनंद के साथ बिताया जा सकता है।

दीपावली पर्व की सार्थकता के लिए जरूरी है, दीये बाहर के ही नहीं, दीये भीतर के भी जलने चाहिए। क्योंकि दीया कहीं भी जले उजाला देता है। दीए का संदेश है–हम जीवन से कभी पलायन न करें, जीवन को परिवर्तन दें, क्योंकि पलायन में मनुष्य के दामन पर बुजदिली का धब्बा लगता है, जबकि परिवर्तन में विकास की संभावनाएँ जीवन की सार्थक दिशाएँ खोज लेती हैं। असल में दीया उन लोगों के लिए भी चुनौती है जो अकर्मण्य, आलसी, निठल्ले, दिशाहीन और चरित्रहीन बनकर सफलता की ऊँचाइयों के सपने देखते हैं। जबकि दीया दुर्बलताओं को मिटाकर नई जीवनशैली की शुरुआत का संकल्प है।

दीपावली के दिन धन कुबेरों के भव्य भवन पंच सितारा होटलों की तरह बिजली के रंग–बिरंगे प्रकाश में नहाएँगे, गरीब की झोंपड़ी में भी एक नन्हा–सा माटी का दीया टिमटिमाएगा। उल्लास, उमंग और हर्ष के इन क्षणों में हरएक का दिल कमल की भाँति खिलेगा। अज्ञान के अंधकार से ब्रह्म के प्रकाश की सूझ 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' की सूझ है। उपनिशद का यह आदर्श वाक्य आज के युग में भी अपनी सार्थकता और प्रासंगिकता अक्षुण्ण बनाए हुए है। आज विज्ञान का युग है। सारी मानवता विनाश के कगार पर खड़ी है। मनुष्य के सामने अस्तित्व और अनस्तित्व का प्रश्न बना हुआ है। विश्वभर मे हत्या, लूटपाट, दिखावा, छल–फरेब, बेईमानी का प्रसार है। मानव–जाति अंधकार में गिरती जा रही है। विवेकी विद्वान उसे बचाने के प्रयास में लगे भी हैं। सत्य, दया, क्षमा, कष्पा, परोपकार आदि के भावों का मूल्य पहचाना जा रहा है। ऐसी स्थिति में उपनिशद का 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' वाक्य उनका मार्गदर्शन करने व महावाक्य है। उस ज्योति की गंभीरता सामान्य ज्योति से बढ़कर ब्रह्म तक पहुँचनी चाहिए। उस ब्रह्म से ही सारे प्राणी पैदा होते हैं, उसमें ही रहते हैं और मरने के बाद उसमें ही प्रवेश कर जाते हैं। उस दिव्य जयोति की अभिवंदना सचमुच समय से पहले, समय के साथ जीने की तैयारी का दूसरा नाम है।

ललित गर्ग
दिल्ली–92

आचार्य विमलसागर जन्मशताब्दी वर्ष का शुभारंभ
जैन धर्म के मर्म को जन–जन तक पहुंचाया आचार्यजी ने
– राज्यपाल श्री कल्याणसिंह

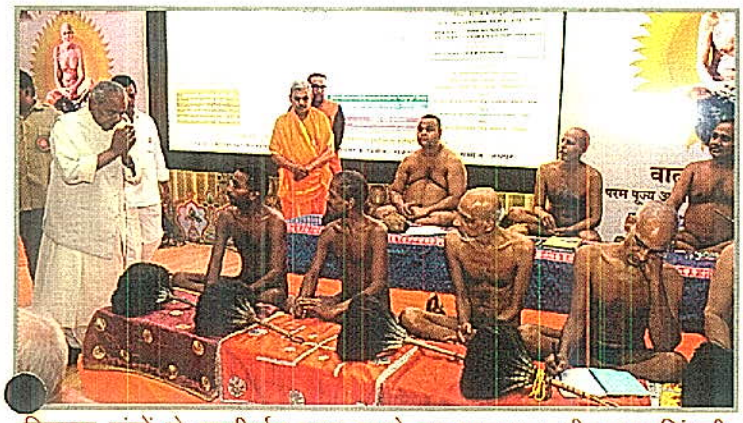

दिगम्बर संतों से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए राज्यपाल श्रीकल्याणसिंहजी

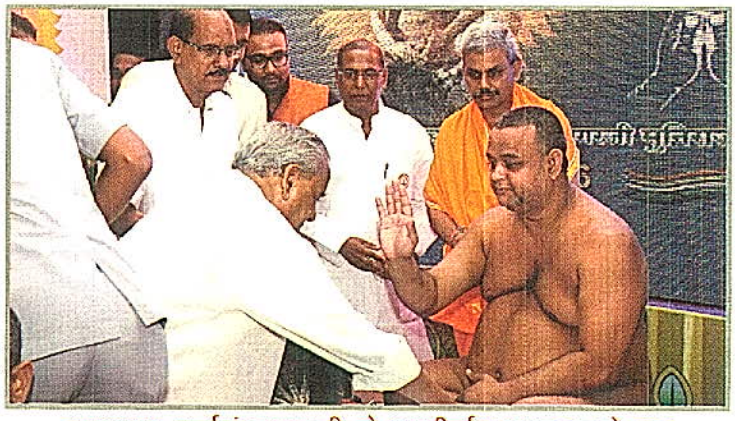

उपाध्याय ऊर्जयंतसागरजी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए राज्यपाल श्रीकल्याणसिंहजी

राज्यपाल श्रीकल्याणसिंहजी को अभिनंदन पत्र भेंट करते हुए समाजजन

राज्यपाल श्रीकल्याणसिंह आचार्य विमलसागरजी के चित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलन करते हुए

अणुविभा केन्द्र जयपुर । वात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री विमलसागरजी महाराज के जन्म शताब्दी वर्ष 2015–16 का शुभारंभ राजस्थान के महामहिम राज्यपाल श्री कल्याणसिंहजी ने किया । अध्यक्षता उत्तरप्रदेश के पूर्व राज्यपाल श्री बी.एल.जोशी ने की ।

सकल दिगम्बर जैन समाज जयपुर द्वारा सुसज्जित अणुविभा केन्द्र में आयोजित उद्घाटन समारोह की प्रेरणा व मार्गदर्शन आचार्य विमलसागरजी के अंतिम दीक्षित शिष्य उपाध्याय श्री ऊर्जयंतसागरजी महाराज ने की । इस महत्तवपूर्ण अवसर पर जयपुर में चातुर्मासरत समस्त मुनिराजों, आर्यिका माताजी व देशभर से गुरुभक्त परिवार आमंत्रित थे । समारोह में आचार्य विशदसागरजी, आचार्य शशांकसागरजी, ऐलाचार्य नवीनसागरजी, मुनि वैराग्यसागरजी, मुनि जिनानंदसागरजी, आर्यिका प्रज्ञमतिमाताजी, आर्यिका विशाश्री माताजी के साथ अनेक पिच्छीधारी संतों ने अपनी विनयांजलि समर्पित कर आचार्य विमलसागरजी को युग चिंतक महान आचार्य निरुपित किया ।

विमलसागरजी की जीवनी सभी को पढ़नी चाहिए – राज्यपाल

उत्तरप्रदेश के दो बार मुख्यमंत्री व अनेक पदों पर रहे राजस्थान के वर्तमान राज्यपाल श्री कल्याणसिंहजी आचार्यश्री विमलसागरजी को याद कर भाव–विभोर हो गए, उन्होंने कहा कि जिस संसदीय क्षेत्र एटा का मैं कई

बार सांसद रहा उसी जिले के कोसमा में जन्में नेमिचन्द्र ने उत्तरप्रदेश के गौरव को संपूर्ण देश में स्थापित कर जैन धर्म के मर्म को जन–जन तक पहुंचाया है । संपूर्ण देश को ऐसे महापुरुषों की जीवनी पढ़नी चाहिए । आचार्य विमलसागजी सरलता, सहजता, समन्वयिता के प्रतिनिधि थे जिन्होंने हम सभी को सन्मार्ग दिखाया उनकी मैं चरण वंदना करता हूँ । शब्द शिल्पी प्रो.नलिन के.शास्त्री द्वारा लिखित व उन्हीं के शब्दों में उद्घोषित अभिनंदन पत्र से उल्लासित होते हुए महामहिम ने कहा कि मैं गरीब किसान का बेटा हूँ अनेक पदों पर रहा हूँ यहाँ अभिनंदन में वर्णित शब्दों के योग्य भी नहीं हूँ लेकिन पत्र के प्रत्येक शब्द के सम्मान में मेरा सिर झुकता चला गया है ।

महापुरुष विचारों के माध्यम से सदैव जीवित रहते है – बी.एल.जोशी

अनेक राज्यों में राज्यपाल व अनेक पदों पर रहे श्री बी.एल.जोशी ने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि विश्व में बढ़ते आतंकवाद के बीच जैन सिद्धांतों का महत्व और अधिक बढ़ गया है । आचार्य विमलसागरजी जैन जगत के महापुरुष है जिन्होंने संपूर्ण जीवन स्व–पर कल्याण में निरंतर रत रहते हुए जिया । ऐसे महापुरुष विचारों के माध्यम से सबके हृदय में सदैव जीवित रहेंगे । उनके जन्म शताब्दी वर्ष हेतु मैं अपनी शुभकामनाएं देता हूँ । मंच पर सर्वश्री देवप्रकाश खण्डाका, आर.के.जैन (मुंबई), बुद्धिप्रकाश भास्कर, गणेश राणा, ताराचंद जैन उपस्थित थे । श्री कल्याणसिंह व श्री बी.एल.जोशी का अभिनंदन मंचासीन समासेवी व श्री एन.के.सेठी, चिंतामणि बज, सुखानंद काला, अशोक नेता, प्रवीण छाबड़ा, आर.के. गोधा, राकेश काला व चातुर्मास कमेटी के सदस्यों ने किया । वाचन प्रो.नलिन के.शास्त्री (बोधगया) ने करते हुए आचार्य विमलसागरजी के कालजयी व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। मंगलाचरण डॉ.प्रेमचंद रांवका ने किया । संचालन एड.अनूपचंद जैन (फिरोजाबाद), पं.सुरेन्द्र जैन (सलुम्बर) ने किया । आभार ताराचंद जैन ने व्यक्त किया।

इस अवसर पर प्रख्यात संगीतकार रविन्द्र जैन की आवाज में स्वरबद्ध 'विमल अभिवंदना' 'विमल अर्चना' नामक सीडी का विमोचन किया गया । पुण्यार्जक आर.के. जैन (मुंबई) बने । आचार्य विमलसागरजी की डायरी के महत्वपूर्ण चिंतन पश्ष्ठों को 'स्वात्म संबोधन के नाम से सांखुनिया परिवार झाग वालों ने प्रकाशित करवाया ।

प्रो.नलिन के. शास्त्री द्वारा उपाध्याय श्री की प्रे से कीर्ति चित्र (डाक्यूमेन्ट्री फिल्म) का प्रसारण हुआ जिसमें आचार्यश्री के जन्म से समाधि तक के कार्यों को प्रदर्शित किया गया है। प्रातः पद्मश्री सुमतिबाई शहा श्राविका संस्थान सोलापुर के बच्चों द्वारा मंगल बिनाद व झण्डारोहण जी.सी.जैन इन्कम टेक्स कॉलोनी द्वारा किया गया । उल्लेखनीय है कि जन्म शताब्दी वर्ष में 22 सितम्बर 2016 तक अनेक जनोपयोगी कार्य व आचार्य विमलसागरजी के व्यक्तित्व–कृतित्व पर आधारित आयोजन संपूर्ण वर्षभर विभिन्न संघों व आचार्यश्री के शिष्यों द्वारा आयोजित किए जायेंगे ।

रुपेन्द्र छाबड़ा 'अशोक'
मुख्य संयो
उपाध्याय ऊर्जयंत सागरजी महाराज चातुर्मास कमेटी
सी–146ए सिद्धार्थ नगर, जवाहर सर्किल, जे.एल.एन. मार्ग
जयपुर 302017 (राजस्थान)
मो.: 09314515597, Email : vimal_rkc@yahoo.in

श्री महावीर ग्रुप ऑफ इण्डस्ट्रीज

संस्थापक एवं निदेशक
स्व.दयाचन्द जैन (फ्रीडम फाईटर)
मो. 98141 75293

IN THE SERVICE OF NATION 1970 ESTD.

मैनेजिंग डायरेक्टर
राजेन्द्रकुमार जैन
मो. 98140 92613

जगराओ (पंजाब)	श्री गंगानगर (राजस्थान)	जम्मू (कश्मीर)	कोलकाता (बंगाल)
223191, 223103	2494412	2547876	98304 86979
222 093, 228962	2494413	2547239	99973 4272

आत्मज्ञान रूप पवित्र तीर्थ है (पद्मनन्दि-पंचविंशतिका, चंद्रोदय अ 28)

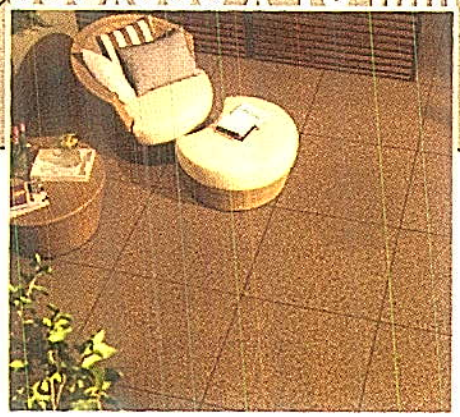

Grano : Benvit

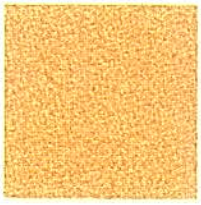

Canyon : Umbre

Krim

Mikado

Raven

Keeping to our words in providing innovation, we at PAVIT have added 600x600 x 10 mm thickness tiles in 16 scintillating colors and 3 different finishes. PAVIT has always selected interpreted and offered surfaces inspired by natural stone.

HOMOGENEOUS VITRIFIED TILES

Homogeneous Body | Low Water Absorption | Stain Resistant | Scratch Resistant | Easy to Clean | Chemical Resistant | Antiskid | Rectified | Antibacterial | Heavy Duty

Pavit Ceramics Pvt. Ltd. An ISO 9001 : 2008 Certified Company

303, Camps Corner-II, Near Pranladnagar Garden, Satellite, Ahmedabad-380015, INDIA.

Ph : +91 79 40266000, Fax : +91 79 40266099, info@pavits.com | www.pavits.com | Toll Free : 1800-233-3366 (10 am to 07 pm)

तीर्थ दो प्रकार के हैं - द्रव्य तीर्थ (सम्मेदशिखर, चम्पापुरी, पावापुरी आदि) और भावतीर्थ (सम्यग्ज्ञान, सम्यक तप, संयम आदि) (मूलाचार, गा. 560)

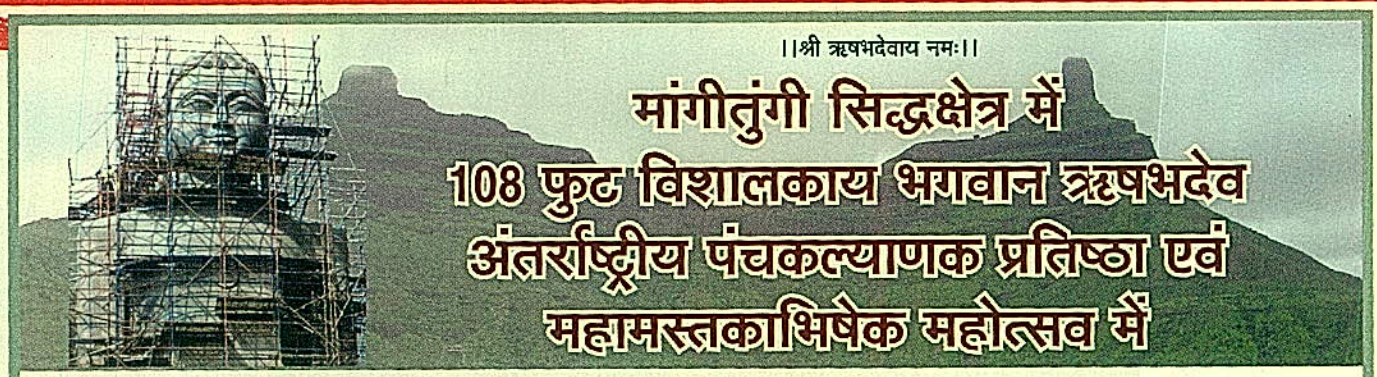

।।श्री ऋषभदेवाय नमः।।

मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र में 108 फुट विशालकाय भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव में

स्वर्णिम इतिहास का प्रथम सूत्रपात

किसको प्राप्त होंगे पंचमकाल के प्रथम ऐतिहासिक सौभाग्य

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा 11 फरवरी से 17 फरवरी 2016

मस्तकाभिषेक 18 फरवरी 2016 से प्रारंभ

कौन करेगा विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा पर प्रथम कलश ?

कौन बनेगा महायज्ञनायक, धनकुबेर, ईशान व सानत्कुमार इन्द्र ?

कौन बनेंगे महोत्सव के अन्य प्रमुख पात्र ?

ऐसे बहुमूल्य गौरवशाली अवसर हेतु शीघ्र संपर्क करें।

-मूर्ति निर्माण की प्रेरणास्रोत एवं महोत्सव सान्निध्य-
गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

मेरी अंतरंग भावना

"इस स्वर्णिम अवसर से दिगम्बर जैन समाज का एक भी बच्चा वंचित नहीं रहना चाहिए, ऐसी मेरी अंतरंग भावना है।

अतः हमारी समाज का प्रत्येक परिवार इन भावनाओं को अवश्य ही पूरा करते हुए अपनी सुविधानुसार किसी भी राशि का एक कलश अवश्य आरक्षित करेगा, ऐसा मुझे विश्वास है।"

-कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी
(अध्यक्ष एवं कुशल नेतृत्व)

-मार्गदर्शन-
प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

पंचकल्याणक महोत्सव में इन्द्र-इन्द्राणी बनने वाले एवं कलश आरक्षण करने वाले समस्त महानुभावों के आवास, भोजन आदि की समुचित व्यवस्था समिति की ओर से रहेगी, जिसकी विस्तृत जानकारी www.highestjainidolinworld.com से प्राप्त कर सकते हैं।

इन्द्र-इन्द्राणी हेतु न्यौछावर राशि

ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर आदि मुख्य इन्द्र
5,51,000/-रु. प्रत्येक

इन्द्र-इन्द्राणी प्रथम श्रेणी
1,00,000/-रु.प्रत्येक

इन्द्र-इन्द्राणी द्वितीय श्रेणी
51,000/-रु. प्रत्येक

महामस्तकाभिषेक कलशों की न्यौछावर राशि

कलश	न्यौछावर राशि	सदस्य संख्या
1. महादिव्य कलश	5,00,000/-रु.	11
2. दिव्य कलश	2,51,000/-रु.	9
3. रत्न कलश	1,00,000/-रु.	7
4. स्वर्ण कलश	51,000/-रु.	5
5. रजत कलश	25,000/-रु.	4
6. भक्ति कलश	11,000/-रु.	3
7. श्रद्धा कलश	5,100/-रु.	2

न्यौछावर राशि जमा करने हेतु-
खाते का नाम
B.R.P.P.M. Samiti Mangitungi
बैंक-P.N.B., A/c No.
3704002100007589
(IFSC Code-PUNB0370400)
शाखा-हस्तिनापुर
बैंक-S.B.I., A/c No.
34736237114
(IFSC Code-SBIN0002353)
शाखा-हस्तिनापुर
नोट - राशि जमा करने के उपरांत निम्न नम्बर पर पूर्ण जानकारी अवश्य देवें।

पूज्य माताजी के मंगल प्रवचन एवं महोत्सव की समस्त जानकारी हेतु प्रतिदिन देखें
पारस प्रतिदिन रात्रि 9 बजे एवं प्रातः 6 बजे
जिनवाणी JINVANI प्रतिदिन मध्यान्ह 3.30 बजे
मंगल कलश प्रतिदिन मध्यान्ह 4 बजे

निवेदक-108 फुट विशालकाय भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव समिति, पो.-मांगीतुंगी (नासिक) महा.

संपर्क हेतु फोन नं.-मो.-09411025124, 09717331008, 09457817324, 09403688133, 02555-286523 (कार्यालय-मांगीतुंगी)
Website : www.highestjainidolinworld.com E-mail : badimurtimangitungi@gmail.com

धर्म किसी दुकान पर नहीं मिलता जो पैसे से खरीदा जाये।